वर्षम् - १०, अङ्कः - १२३

ओ३म्

भाद्रपद-अश्विनमासः-२०७५/ सितम्बरमासः-२०१८

आर्ष-ज्योतिः

ज्योतिष्कृणोति सूनरी

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास का द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

एशियन गेम 2018 रजतपदक विजेता गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक दीपक कुमार

प्रसारणकार्यालयः

श्रीमद् दयानन्दार्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुलम् पौन्धा,

देहरादूनम् (उत्तराखण्डः)

दूरवाणी - ७५७८४६६६५८ चलवाणी - ०६४११९०६१०४

ई-मेल : arsh.jyoti@yahoo.in Website: www.pranwanand.org

श्रीमद् दयानन्द आर्षज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा, देहरादून में आयोजित

उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार

गुरुकुल में स्वतन्त्रतादिवस-आयोजन

❖ ओ३म् ❖

आर्ष-ज्योतिः

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास

का

द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

भाद्रपद-आश्विनमासः, विक्रमसंवत्-२०७५ / सितम्बरमासः-२०१८, सृष्टिसम्वत्-१,९६,०८,५३,११९

वर्षम् - १० :: अङ्कः - १२३ मूल्यम्- रु. ५ प्रति, वार्षिकम्-५०

❖संरक्षकाः❖

स्वामी प्रणवानन्दः सरस्वती

कै. रुद्रसेन आर्यः

प्रो.पीयूषकान्तदीक्षितवर्याः

श्रीगिरीश-अवस्थीवर्याः

❖परामर्शदातृमण्डलम्❖

डॉ. रघुवीरवेदालङ्कारः

प्रो. महावीरः

आचार्ययज्ञवीरवर्याः

श्रीचन्द्रभूषणशास्त्री

❖मुख्यसम्पादकौ❖

डॉ. धनञ्जय आर्यः

डॉ. रवीन्द्रकुमारः

❖कार्यकारी सम्पादकः❖

ब्र. शिवदेवार्यः

❖व्यवस्थापकाः❖

ब्र. अनुदीपार्यः

ब्र. कैलाशार्यः

❖कार्यालयः❖

श्रीमद्दयानन्द-आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुलम्

दूनवाटिका-२, पौन्धा,

देहरादूनम् (उत्तराखण्डः)

दूरवाणी-०९४११११०६१०४, ८८१०००५०९६

website: www.pranwanand.org

E-mail : arsh.jyoti@yahoo.in

विषय-क्रमणिका

विषयः	पृष्ठः
सम्पादकीय	२
बीती यादें एशियन गेम्स के रजत पदक...	५
सत्यार्थ-प्रकाश का हिन्दी में लिखा जाना...	८
सकारात्मक सोच का अभाव...	११
एक याचना प्रकृति के नाम	१३
तो फिर हिन्दी के प्रति ये बेगानापन क्यों?	१४
आदर्श पिता का स्वरूप	१६
कवियों की कविता	१७
पलायन से पीडित उत्तराखण्ड	१८
तुम हो मेरे हमवतन	२०
अरे अब तो बजालो धर्म-संस्कृति बचाने का...	२०
वर्तमान भारत	२१
क्रीड़ाजगतः जाज्वल्यमाननक्षत्राणि	२२
वाजपेयी ततो वै ह्यनन्ते रतः	२२
योगदर्शनशिक्षणम्	२३

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

प्रकाशनतिथि-३ सितम्बर २०१८ :: डाकप्रेषणतिथि-८ सितम्बर २०१८

सम्पादक की कलम से...

राष्ट्रिय एकता एक प्रश्न

किसी भी राष्ट्र के लिये राष्ट्रिय एकता का होना अत्यन्त आवश्यक है। राष्ट्रिय एकता राष्ट्र को सशक्त व संगठित बनाये रखने की अनन्य साधिका है। राष्ट्रिय एकता विभिन्नताओं में एकता स्थापित करने की व्यवस्थापिका है।

प्रायः कहा जाता है कि वर्तमान में भारत की राष्ट्रिय एकता सर्वमत समभाव पर आश्रित है। सर्वमत समभाव से तात्पर्य है कि सभी मतों के प्रति समान आदर-भाव। मुसलमानों के धार्मिक कृत्यों में हिन्दुओं की और हिन्दुओं के धार्मिक कृत्यों में मुसलमानों का एकत्रित हो जाना आदि राष्ट्रिय एकता का स्वरूप बताया जा रहा है। जबकि मेरी दृष्टि में यह राष्ट्रिय-एकता को विखण्डित करने का षड्यन्त्र है। यही वह विकृत अवधारणा है, जिसने भारतवर्ष का विभाजन किया, भारत में असहिष्णुता का पाठ पढ़ाया, वन्दे मातरम् को बोलना साम्प्रदायिक बताया और भारत में आतंकवाद, नकस्लबाद जैसी महाबिमारी को जन्म देकर हँसते हुए भारतवर्ष को करुणक्रन्दन से युक्त होने पर मजबूर कर दिया।

भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ-मन्दिरों, गुरुकुलों की व्यवस्था और आय पर सरकार का अधिकार है, परन्तु भारत की किसी भी मस्जिद, गिरिजाघर या मदरसों की व्यवस्था पर सरकार कोई हस्तक्षेप नहीं करती। हिन्दुओं के बड़े-बड़े विद्वानों, सन्तों व विदुषियों को येन-केन प्रकारेण फंसाकर जेल भिजवाया जाता है किन्तु मस्जिद तथा मदरसों के इमामों के दोष युक्त होने पर कुछ नहीं किया जाता। जामा मस्जिद दिल्ली के पूर्व प्रमुख इमाम अब्दुल्ला बुखारी को तीन-तीन बार न्यायालयों के समन के बावजूद हाथ तक नहीं लगाया गया। 'हिन्दू लॉ' को 'गरीब की बहू सबकी भाभी' मानकर छेड़खानी की जाती है किन्तु 'मुस्लिम लॉ' पर कोई हस्तक्षेप नहीं होता। भारत का सर्वोच्च न्यायालय भी 'मुस्लिम लॉ' की दलिलें प्रस्तुत करता है। मुस्लिम हज-यात्रियों पर सरकार करोड़ों रुपया खर्च करती है किन्तु कुम्भ मेले पर टैक्स लगाती है। फिर ये व्यवस्थायें राष्ट्रिय एकता को कैसे सिद्ध कर सकती हैं? ये कैसा न्याय है और कैसी व्यवस्था है? क्या यह न्याय व व्यवस्था प्रत्येक भारतीय के लिए एक समान है? और यदि नहीं है तो राष्ट्रिय एकता कैसे स्थापित हो पायेगी?

हमारा भारतीय संविधान विभिन्न धर्मों, जातियों, प्रान्तों में विभेद खड़ा करने में राष्ट्रिय-एकता का स्वरूप निर्धारित करता है। अहिन्दू एक से अधिक विवाह कर सकता है, किन्तु हिन्दू एक पत्नी रहते हुए दूसरा विवाह रचाएँ तो संविधान का उल्लंघन है। संविधान शिक्षा, नौकरी, पदोन्नति में जातीयता के आधार पर प्रोत्साहन देता है। चिकित्सा, इंजीनियरिंग के क्षेत्र में ८० प्रतिशत अंक पाने वाले वंचित रह जाते हैं और २५ प्रतिशत अंक पाने वाले सर्वथा अयोग्य भी जातिगत आरक्षण के नाम पर प्रविष्ट हो जाते हैं। ये कैसी विस्मता है? क्या ये पक्षपात नहीं है?

भारत में भाषायी स्तर पर राष्ट्रिय एकता की माला में अंग्रेजी को पिरोया गया है। भारत की प्रान्तीय भाषायें राष्ट्रिय-एकता में सक्षम नहीं और संस्कृत पुत्री हिन्दी जो राष्ट्रिय-एकता की पथप्रदर्शिका बन सकती थी, उसमें नेताओं को साम्प्रदायिकता और दक्षिण भारत का अपमान दृष्टिगोचर होता है। इसलिए भारत में राष्ट्रिय एकता के निर्धारण में विदेशी भाषा अंग्रेजी एक सूत्र बनी हुई है। देखो! भला जिस भाषा को भारत के सभी लोग जानते तक न हों तो उस भाषा से एकता कैसे स्थापित हो सकती है? अंग्रेजी भाषा राष्ट्रिय एकता की जब सूत्र बनी तो अंग्रेजी सोच ने सभी के मन-मस्तिष्क को गहरा पहार किया कि हम आज भी काले अंग्रेज बनकर जी रहे हैं। अपनी सभ्यता व संस्कृति से विमुख होते जा रहे हैं। प्रातः जागरण से लेकर रात्रि शयन तक विदेशी वस्तुओं का प्रयोग तथा विदेशी सभ्यता का अन्धानुकरण हमारी राष्ट्रियता की पहचान बनती जा रही है।

देश में व्याप्त साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद आदि सभी राष्ट्रिय एकता के अवरोधक तत्त्व हैं। ये सभी अवरोधक तत्त्व राष्ट्रिय-एकता की दीवार को कमजोर बनाते हैं। इन अवरोधक तत्त्वों के प्रभाव से ग्रसित होकर लोगों की मानसिकता क्षुद्र होतीं जा रही है, जो निज स्वार्थ के चलते स्वयं को राष्ट्र की प्रमुख धारा से अलग रखते हैं। इन विघटनकारी तत्त्वों की संख्या जब और अधिक होने लगती है तब ये सभी परस्पर राष्ट्रिय एकता को कमजोर बनाते हैं। इस प्रकार ये विभिन्नताएँ जो हमारी संस्कृति की अमिट पहचान है, जिनपर हम गौरवान्वित होते हैं वे ही जब उग्र रूप धारण करती हैं तब यह हमारी एकता और अखण्डता की बाधक बन जाती हैं। देश की एकता के लिए आन्तरिक अवरोधक तत्त्वों के अतिरिक्त बाह्य शक्तियाँ भी बाधक बनती हैं। जो देश हमारी स्वतन्त्रता व प्रगति से ईर्ष्या रखते हैं, वे इसे खण्डित करने हेतु सदैव प्रयासरत् रहते हैं। कश्मीर की समस्या हमारी इन्हीं प्रयासों की उपज है, जिससे हमारे देश के कई नवयुवक दिग्भ्रमित होकर राष्ट्र की प्रमुख धारा से अलग हो चुके हैं।

आज हमारे भारतवर्ष के लोगों में ऐसी क्षुद्र मासिकता विकसित हो गई है, जो अत्यन्त दयनीय है। यह देखकर बहुत आश्चर्य होता है कि उच्चबुद्धिजीविवर्ग अपना भारतीय अस्तित्व ही खो देता है। अभी हाल में ही एक ऐसी घटना भीमा कोरे गाँव हिंसा से सम्बन्धित हम सबके सामने आयी, जिसने सभी को स्तब्ध कर दिया। इसमें जो आरोपित पकड़े गये हैं वे बहुत की योग्य शिक्षाविद् हैं परन्तु उनकी मानसिकस्थिति को देख आश्चर्य लगता है। देश के माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी सहित अनेक शीर्षस्थ नेताओं को समाप्त करने के लिए एक योजनाबद्ध तरीके से कार्य हो रहा था, किन्तु हमारी की सुरक्षा ऐजन्सियों ने मिलकर अलग-अलग स्थानों से योजनाकर्ताओं को पकड़ा लिया। इन आरोपियों में मानवाधिकार कार्यकर्त्री सुधा भारद्वाज, मानवाधिकार एवं पत्रकार गौतम नवलखा, एक्टिविष्ट वर्नान गॉन्जारन्वेस, एक्टिविष्ट एवं वामपन्थी वरबरा रॉव एवं वकील अरुण फरेरा जैसे उच्चशिक्षाविद् शामिल हैं। इससे बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि इन लोगों के समर्थन में देश के बड़े-बड़े राजनेता व सामाजिक-कार्यकर्ता खड़े हैं। ऐसे राजनेताओं व सामाजिक-कार्यकर्ताओं को देखकर शर्म आती है? इनको देखकर हम कैसे कह सकते हैं कि हमारा देश राष्ट्रिय एकता में सम्बद्ध है? क्या ऐसे लोगों से देश की एकता व अखण्डता स्थिर रह सकती है?

प्रत्येक राष्ट्र के लिए राष्ट्रिय एकता का होना अत्यावश्यक है। भारत जैसे एक असीम असमानताओं से भरे देश में एकता लोगों को जोड़ने वाले कारक के रूप में काम करता है। पिछले कुछ वर्षों से पाकिस्तान हिन्दू–मुस्लिम मतभेद बढ़ाते हुए एवं कश्मीर में भारत विरोधी भावनाओं एवं उग्रवाद को उकसाते हुए राष्ट्रिय एकता को कमजोर करने की कोशिश कर रहा है। इन्हीं विभाजनकारी नीतियों द्वारा अंग्रेजों ने सैकड़ों वर्षों तक भारत पर शासन किया। लेकिन जब भारत के लोगों ने इन मतभेदों से ऊपर उठकर 'राष्ट्रवाद' का प्रदर्शन किया तो अंग्रेज स्वयं ही भारत से जाने को उद्यत हो गये।

लोकतन्त्र की स्थिरता, स्वतन्त्रता की रक्षा एवं राष्ट्र के समग्र विकास के लिए राष्ट्रिय एकता और एकता निश्चित रूप से आवश्यक है। जब तक पूरा राष्ट्र एकता की भावना को अपनाने का प्रयास नहीं करता तब तक देश में कोई विकास या आर्थिक प्रगति नहीं हो पायेगी। इसलिए देश के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वे राष्ट्रिय एकता को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रिय एकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँ।

राष्ट्रिय एकता को अक्षुण्य बनाये रखने के लिए हम अपनी क्षुद्र मानसिकता से स्वयं को दूर रखें तथा इसमें बाधक समस्त तत्त्वों का बहिष्कार करें। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हम जिस क्षेत्र, प्रान्त, जाति या समुदाय से हैं परन्तु उससे पूर्व हम भारतीय नागरिक हैं। भारतीयता ही हमारी पहचान है। इसलिए हम कभी भी ऐसे कृत्य न करें जो हमारे देश के गौरव व उसकी प्रगति में बाधक बनें...

– शिवदेव आर्य...
गुरुकुल पौन्धा, देहरादून
मो.–८८१०००५०९६

गुरुकुल के 'दीपक' ने जकार्ता में रोशन किया देश का नाम

एशियन गेम्स में रजत पदक जीतने वाले दीपक ने दून में सीखी है निशानेबाजी

मनीष त्रिपाठी

विकासनगर। 18वें एशियाई खेलों में भारत को रजत पदक दिलाने वाले दीपक कुमार का द्रोणनगरी से बेहद खास रिश्ता है। या यूं कहें कि यहीं पर रहते हुए उन्होंने शूटिंग के गुर सीखे। दीपक कुमार वर्ष 2001 से 2007 तक पौंधा स्थित श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल के छात्र रहे। शास्त्रों, वेदों, पुराणों और उपनिषदों का ज्ञान रखने वाले दीपक धारा प्रवाह संस्कृत बोलते हैं। उन्होंने गुरुकुल में रहते हुए ही शूटिंग सीखना प्रारंभ किया। यहां बनी

2007 तक गुरुकुल में ही की पढ़ाई, यहीं पर सीखे शूटिंग के गुर

शूटिंग रेंज में वह घंटों निशाने की प्रेक्टिस किया करते थे। इसके बाद वर्ष 2004 में वह गुरुकुल टीम का हिस्सा बन गए। वर्ष 2007 में गुवाहाटी में संपन्न हुए 33वें नेशनल गेम्स में उन्होंने उत्तराखंड का प्रतिनिधित्व किया। 2008 में उनका चयन एयर फोर्स शूटिंग टीम के लिए हुआ।

वर्तमान में एयर फोर्स में रहते हुए वह भारतीय शूटिंग टीम का प्रतिनिधित्व करते हैं। दीपक राष्ट्रमंडल खेल में भी हिस्सा ले चुके हैं। साथ ही विश्व शूटिंग चैंपियनशिप प्रति योगिताओं में भी प्रतिभाग कर उन्होंने कई पदक हासिल किए हैं। 05 नवंबर 1987 को जन्मे दीपक मूल रूप से दिल्ली के रहने वाले हैं। उनके पिता राजकुमार किसान हैं। जबकि, माता गृहणी हैं। दीपक अब भी गुरुकुल आकर एक-एक महीने तक योगाभ्यास करते हैं।

मालूम हो कि दीपक कुमार ने एशियन गेम्स 2018 मे भारत को तीसरा पदक दिलवाया है। सोमवार को जकार्ता में 30 वर्षीय निशानेबाज ने 10 मीटर एयर राइफल में सिल्वर मेडल जीता। दीपक 247.7 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रहे जबकि, चीन के होरन येंग ने एशियन गेम्स के रिकॉर्ड 249.1 के साथ गोल्ड मेडल जीता। फाइनल में एक समय ऐसा भी आया जब दीपक बाहर होने की कगार पर थे, लेकिन उन्होंने शानदार वापसी करते हुए अच्छा प्रदर्शन कर ताइवान के लु शाओचुआन को मात देते हुए रजत पर कब्जा जमाया।

सूचना एवं प्रसारण राज्यमंत्री ने दी बधाई

सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) राज्यवर्धन राठौर ने ट्वीट कर दीपक को इस कामयाबी पर बधाई दी है। उन्होंने ट्वीट कर लिखा कि 'देहरादून गुरुकुल से एशियन गेम्स में मेडलिस्ट तक, यह दीपक कुमार का शानदार सफर है। मैं उन्हें 10 मीटर एयर राइफल में मेडल जीतने के लिए बधाई देता हूं। देश को उन पर गर्व है।'

25 किलो वजन लेकर चलते थे दीपक

गुरुकुल में शूटिंग का अभ्यास पूरा करने के बाद दीपक ने तैयारी जारी रखने के लिए जसपाल राणा शूटिंग रेंज में प्रवेश किया। लेकिन साधन नहीं होने के कारण उन्हें अभ्यास के लिए रेंज तक की 12 किमी की दूरी पैदल तय करनी पड़ती थी। इस दौरान उनके एक हाथ में 15 किलो की एयर राइफल होती थी और पीठ पर 10 किलो की राइफल किट। रोजाना इसी तरह वह गुरुकुल से शूटिंग रेंज जाते थे।

गुरुकुल ने बहुत कुछ सिखाया

जीत हासिल करने के बाद दीपक कुमार ने कहा कि 'हर कोई यह सोचता है कि उसे क्या मिलेगा। मैंने अपने गुरुकुल में सीखा है कि आपको आपका हिस्सा मिल ही जाएगा। दुखी होने की कोई जरूरत नहीं है। जिंदगी बहुत छोटी है।'

कंठस्थ हैं सामवेद के मंत्र

एक शार्प शूटर होने के साथ ही दीपक गुरुकुल के मेधावी छात्रों में से एक हैं। रोजाना सुबह 4 बजे से लेकर रात्रि 10 बजे तक वह गुरुकुल की दिनचर्या का पालन किया करते थे। योगाभ्यास के साथ ही वह ध्यान एवं हवन भी करते थे। हवन के लिए जंगल से लकड़ी लाना भी उनकी दिनचर्या में शामिल था। सामवेद के 1000 मंत्रों के साथ ही महर्षि पाणिनी की अष्टाध्यायी समेत अन्य पांच ग्रंथ उन्हें कंठस्थ हैं। गुरुकुल में उन्होंने शूटिंग का अभ्यास आचार्य चंद्रभूषण के निर्देशन में किया। गुरुकुल पौंधा के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती भी दीपक का मार्गदर्शन किया करते थे।

एशियन गेम्स में सिल्वर मेडल हासिल करने वाले दीपक कुमार।

बीती यादें एशियन गेम्स के रजत पदक विजेता व हमारे सहपाठी दीपक कुमार के साथ

❑ वेदप्रकाश आर्य...

'दीपक कुमार' वह नाम जिसने आज एशियन गेम्स में निशानेबाजी में रजत पदक प्राप्त कर अपना व अपने विद्यालय श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा देहरादून का नाम रोशन किया व भारत को गौरवान्वित किया।

मैं गर्वान्वित व रोमाञ्चित हूँ कि दीपक कुमार हमारे विद्यालय गुरुकुल पौन्धा देहरादून के सहपाठी रहे हैं। गुरुकुल में हमारे निवास कक्ष में हम कुल छः छात्र थे, जिसमें से एक दीपक कुमार भी थे। हमारे गुरुकुल पौन्धा देहरादून से तीन कि.मी. की दूरी पर प्रख्यात पूर्व निशानेबाज श्री जसपाल राणा के पिता व उत्तरांचल के पूर्व खेल मंत्री श्री नारायण सिंह राणा जी की शूटिंग रेन्ज थी, जहाँ दूर-दूर से निशानेबाजी सीखने वाले आते थे।

गुरुकुल के युवा आचार्य प्रवर श्री धनंजय जी छात्रहिताय हमेशा तत्पर रहते थे, गुरुकुलीय छात्रों को कंप्यूटर सिखाने के लिए कंप्यूटर व प्रशिक्षक की व्यवस्था कराना हो या फिर संगीत सिखाने हेतु हारमोनियम, तबला, संगीत-पैड आदि वाद्ययंत्रों व संगीतज्ञ की व्यवस्था करना आदि हो, परंपरागत गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से इतर शिक्षणेतर सहगामी क्रियाकलापों के लिए हमेशा ही तत्पर रहते थे, इसी क्रम में उन्होने निशानेबाजी में भी छात्रों को आजमाने की ठानी। इस हेतु मुझ समेत दीपक कुमार (दीपक नाम से गुरुकुल में दो अन्य छात्र व एक स्नातक शिक्षक भी थे तो इनका नाम बोलचाल हेतु दीपेन्द्र रखा गया ताकि भ्रम न हो), दो छात्र और जिनके नाम भी दीपक ही थे, जसविन्द्र, अक्षय, गणेश और अनुदीप का चयन किया गया।

हम सभी छात्रों की जून 2003 के वार्षिकोत्सव के बाद होने वाली गर्मी की छुट्टी रद्द कर दी गई, तब हमे याद है कि हम लोग घर जाने हेतु मन मसोस कर रह गए थे लेकिन आचार्यवर का आदेश भला कौन टाले? गुरुकुल से तीन कि.मी. पैदल चलकर हम लोग शूटिंग रेन्ज मे जाते थे, जहां जसपाल राणा जी के पिताश्री जो हमारे प्रशिक्षक थे, वो बहुत ही तल्लीनता के साथ निशानेबाजी के गुर सिखाते थे। कुछ दिन जांच परखने के बाद कुछ छात्रों को जिनका हाथ पिस्टल पर ठीक बैठता था उन्हे पिस्टल का अभ्यास व जिनका हाथ राइफल पर ठीक बैठता उनको राइफल सीखने को कहा गया। हमारा हाथ पिस्टल पकड़ने पर सीधा नहीं रहता था सो हमे राइफलमैन बनना पड़ा, दीपक कुमार का भी राइफल निर्धारित हुआ। यहां दो-तीन घंटे प्रशिक्षण लेने के उपरान्त पुनः तीन-चार कि.मी. पहाड़ी पथरीले रास्ते पर पैदल वापसी.... गुरुकुल आने पर थकावट हो जाती थी, सच कहूं तो मेरा मन पढ़ाई से इतर कभी इस निशानेबाजी में नहीं था....पर आचार्य जी का आदेश मन मारकर ही पालन कर रहा था। कुछ दिन बीते तभी एक दिन की बात है......मुझसे छोटे गणेश व अक्षय जो कि गुरुकुल की पुरानी साइकिल से शूटिंग रेन्ज जा रहे थे......रास्ते में मिल गए.....मैने कहा कि रुको मैं भी चलूंगा....और बड़े होने का रौब दिखाकर उनसे साइकिल ले ली...एक को आगे बैठा लिया दूसरे को पीछे और खुद ड्राइविंग सीट पर ......, (मैने तब हाल ही में एक साल पहले ही गर्मी की छुट्टी में अपने अनुज दिव्य से साइकिल सीखी थी सो अचानक साइकिल चलाने की इच्छा प्रबल हो आई) ...चलाने लगा साइकिल.... तभी ढलान वाला रास्ता आ गया। मैने हल्का ब्रेक लेने की कोशिश की ताकि ढलान पर साइकिल की रफ्तार सीमित ही रहे... पर यह क्या ....? ब्रेक लेने पर ब्रेक लगा ही नहीं....मैने कहा कि अरे इसमें ब्रेक नहीं है क्या? तो छोटा गणेश बोला -भ्राता

जी ! हम लोग इसी तरह जाते हैं.....अच्छा..तब तो चलो. ...पर ये क्या साइकिल तो अब तेज होती जा रही थी.... करुं तो करुं क्या ढलान वाला रास्ता...देखते ही देखते अब साइकिल की रफ्तार अपने चरम पर ....मजा तो खूब आ रहा था ....रफ्तार में सर के बाल छोटे ही सही पर हवा में लहरा रहे थे.....अब चिन्ता हो आई कि आखिर ये साइकिल रुकेगी कैसे?....तेज रफ्तार.. घंटी न ब्रेक सुपरफास्ट एक्सप्रेस... तभी अचानक पचासों भेड़-बकरियों का झुण्ड आ गया...अब बेचारे वो सड़क पे चलने के यातायात के नियम तो जानने से रहे .... वो ऐसे झुंड में चल रहे थे मानो ये सड़क उन्हीं के लिए बनी हो......अब साइकिल में घंटी भी नहीं थी सो हम तीनों जोर से चिल्लाने लगे बस काम बन गया....फिर मैं भी तो ठहरा एक्सपर्ट साइकिल ड्राइवर. ...मजाल कि कोई बकरी साइकिल के नीचे आवे...एक बला टली... झुंड पार हुआ ही था कि दूसरी बला आई. ...तेज घुमावदार मोड़ आया.....मुड़ना मजबूरी थी... नहीं मुड़े तो सीधे खाई मे राम नाम सत्य... यानि या तो खाई में जाओ....या फिर साइकिल मोड़ो.....फैसला कठिन था पर सोचने की फुरसत नहीं थी.. सो फैसला मोड़ने का लिया. ... बस फिर क्या था... ढलान में तेज रफ्तार साइकिल... ..मोड़ने के साथ ही एक छोटे से पत्थर पे पहिया टकराया हैंडल हाथ से छिटक के दूर.....अब मैं बीसियों फीट घिसटा...साइकिल व दोनों बच्चों का भी कमोबेश यही हाल, साइकिल जलेबी की तरह हो गई, मेरे हाथ पैर बुरी तरह छिल गए, दोनों अनुजों को भी चोटें आईं....बड़ा होने के नाते मुझे सबसे ज्यादा चोटें प्राप्त हुईं, संयोग ठीक था कि दीपक कुमार समेत बाकी अन्य सभी साथी भी घटनास्थल के बिल्कुल करीब ही थे व उन सबने हमारी तेज रफ्तार साइकिल का नजारा देख लिया था.....सबने उठाया...पौन्धा गांव में डॉक्टर ने खूब सूई दवाई की... और मेरी तो करीब महीने भर की छुट्टी हो गई....हाथ पैर हर जगह पट्टियां....पूरा फिल्मी सीन....चलना-फिरना तो दूर उठना-बैठना तक प्रतिबंधित....एक अन्य मित्र दीपक बब्बन ने हमारा खूब ख्याल रखा...अपने हाथों खिलाना-पिलाना....मरहम पट्टी...सब बब्बन व अन्य मित्रों के भरोसे.....

.....और इस प्रकार एक निशानेबाज पैदा होते के साथ समाप्त हो गया......अब कान पकड़ लिए कि फिर शूटिंग नहीं करुंगा....

....इधर अन्य साथी लगे रहे कुछ हटे..कुछ जुटे. ...पर दीपक कुमार लगे रहे..।

....यदा-कदा आचार्य जी दिल्ली या अन्यत्र जाते तो उनसे छुपाकर हम लोग ऊपर के प्लॉट पर शाम को क्रिकेट खेलने जाते थे...हाथ का बना बल्ला जो झाड़ियों मे छुपा के रखा जाता था.....जब दीपक भाई की बैटिंग होती थी तो उन्हे गेंदबाजी करना खतरे से खाली नहीं था...देह से मजबूत आदमी के बल्ले पे जब गेन्द चढ़ जाए तो दूर खाई मे से ढूंढके लाने में बड़ी दिक्कत होती ....तिस पर अपने सुपर कैप्टन रवीन्द्र जी का गुस्सा और झेलो..., दीपक भाई को इक्के दुक्के में विश्वास न था.....जब मारे तो मारे छक्के ही भले लाठी भांजने में पूरा ओवर खाली क्यूं न चला जाये...और नजरें टिक गई तो अकेले इतने रन कूट देवें कि फिर न बनने के वो हमारी पूरी टीम से भी...और उसके बाद रवीन्द्र जी दो-तीन दिन लगातार नाराज रहते.।

एक बार की बात है.. आचार्य जी समेत हम बारह लोग का गुरुकुल की गाड़ी से होली से तीन दिन पूर्व हरिद्वार के लालढाँग के जंगलों में जाना हुआ, जंगल में जाना व वहां मचान बनाकर रात्रि निवास करना...जंगली परिवेश में पूरे तीन दिन व रात सतर्कता से जंगल के नियमों के अनुरूप रहना, रात्रि में बारी-बारी से पहरेदारी करना, जंगली जानवरों को देखना....ये सब बहुत ही रोमांचकारी था, इस यात्रा का नेतृत्व आचार्य डॉ. देवव्रत जी (अध्यक्ष आर्य वीर दल) एवं गुरुकुल कण्वाश्रम के आचार्य द्वारा किया गया , इस टीम मे दीपक कुमार का जाना भी तय था पर अकस्मात् उनके पेट मे दर्द होने लगा जिससे ऐन मौके पर वह इस यात्रा में न जा सके...।

यात्रा समाप्ति के पश्चात् गुरुकुल आए तो पता चला कि दीपक कुमार का तभी से पेट दर्द लगातार तेज होता गया, वह असहनीय पीड़ा को झेल रहे थे...यह देख आचार्य धनंजय जी व अधिष्ठाता चन्द्रभूषण जी तत्काल

दीपक को देहरादून के एक बड़े हॉस्पिटल में ले गए.... अल्ट्रासाउंड व अन्य तमाम जांचें हुईं.....पता चला अपेन्डिक्स का दर्द है...डॉक्टरों ने बताया कि अपेन्डिक्स फूटे चौबीस घंटे से ज्यादा बीत चुके हैं...इतने लंबे समय तक तेज दर्द को यह लड़का कैसे सह गया ? और उसके जीवित होने पर भी डॉक्टर आश्चर्य कर रहे थे....ये तो शुक्र है इन तीन चार दिनों में पुष्पेन्द्र भाई के ताऊ जी जो संयोग से गुरुकुल मे थे जो कि प्राकृतिक चिकित्सा में प्रवीण थे, वो दीपक कुमार को तीनो दिन लगातार मिट्टी लेपन करते रहे...जिससे उन्हे लाभ मिला....डॉक्टरों ने तुरन्त ऑपरेशन करने को कहा....साथ ही जान बचने की उम्मीद भी कम बताई.... .डॉक्टर ने फॉर्म भरवाया व माता-पिता के दस्तखत करवाने को कहा.....अब माता-पिता तो दिल्ली रहते हैं....भला अचानक कहां से बिन जानकारी आ जाएं ?..अंततः आचार्य जी ने डॉक्टरों को ऑपरेशन के लिए मनाया व पिता के कॉलम मे खुद अपने हस्ताक्षर करके ऑपरेशन का खतरा व सारी जिम्मेदारी खुद मोल ले ली.....कल्पना करिए...यदि कहीं कुछ होता तो आचार्य जी पर क्या बीतती???...पर ईश्वरेच्छा बलीयसी....आखिर दीपक कुमार ने मौत को मात दे दी व नई जिन्दगी प्राप्त कर ली... ऑपरेशन सफल रहा...और हम सबने बारी-बारी हॉस्पिटल जाकर दीपक कुमार की देखभाल की...आज भी दीपक कुमार आचार्य धनंजय जी को पितातुल्य ही मानते हैं...और आचार्य जी ने भी उन्हे नई जिन्दगी में कुछ कर गुजरने की प्रेरणा दी....जिसका प्रतिफल ये आज का दिवस है।

कक्षा में हमसे जूनियर दीपक कुमार व्याकरण आदि विषयों मे हमारे सहपाठी हुआ करते थे..पर जिस तरह हमे निशानेबाजी रास न आई.. उसी तरह उन्हे व्याकरण की घंटी भी रास न आती.... शायद वह निशानेबाजी के लिए ही बने थे....या यूं कहें कि निशानेबाजी का कठिन परिश्रम उन्हीं के बस की बात थी.....काल क्रमेण आचार्य जी ने अथक परिश्रम से शूटिंग रेन्ज गुरुकुल में ही स्थापित करवा दी, स्वयं का शूटिंग रेन्ज बना लेना सबके बस की बात नहीं..पर ये अपने आचार्य धनंजय जी ही थे...जिन्होंने ठान लिया कि बच्चों का अधिकतम समय शूटिंग रेन्ज जाने-आने मे लग रहा है...सो यत्र-तत्र से धनादि की व्यवस्था करके शूटिंग रेन्ज स्थापित कर दिया, इस प्रकार दीपक कुमार समेत गुरुकुल के बच्चे अब अपने ही गुरुकुल की शूटिंग रेन्ज में परिश्रम करने लगे, अक्सर उचित अंतराल पर प्रशिक्षक श्री नारायण सिंह राणा जी भी अपना समय देते व निशानेबाजी के गुर सिखाते, दिल्ली से बड़े आचार्य जी यानि स्वामी प्रणवानंद जी जब आते तो खूब प्रेरित करते....., गुरुकुल के अधिष्ठाता श्री चंद्रभूषण जी की नजर निशानेबाज छात्रों पर रहती...कहीं कोई कमी-कसर न रहने पाए...छात्रों को तमाम निशानेबाजी प्रतियोगिताओं में लेकर जाना-आना इन्हीं के जिम्मे रहता. ..

इस प्रकार गुरुकुल पौन्धा में निशानेबाजी का लगा पौधा शनैः-शनैः बढ़ता रहा...दीपक कुमार समेत अनेक छात्रों ने सभी स्तर की प्रतियोगिताओं में गुरुकुल का व अपना नाम रोशन किया...जिसके फलस्वरूप गुरुकुल के कई स्नातक सेना, पुलिस, स्कूल आदि में कुशल निशानेबाजी के दम पर सेवारत हैं।

..स्कूल लेवल....डिस्ट्रिक लेवल.....नेशनल..... इंटरनेशनल. ..और आज यह दीपक कुमार का एशियन गेम्स में रजत. ...इससे पूर्व वर्ल्ड कप में भी दीपक कुमार विजयी रहे थे. ...अपने कक्ष मे रहने वाले दीपक कुमार से तब निशानेबाजी के प्रारंभावस्था में हमने कोई उम्मीद नही पाली...तब पता न था यह लड़का आगे चलकर गर्व का अनुभव कराएगा पर अब तो दिनोदिन उम्मीदें बढ़ती जा रही हैं, दीपक कुमार ने भी उम्मीदों को पूरा करने का जैसे ठेका ले रखा है..., स्वभाव से नम्र व मृदुभाषी दीपक अब गुरुकुल का ही दीपक न रहे...अब उनसे उम्मीदें पालने वालों का दायरा बढ़ रहा है....अब वह निशानेबाजी मे भारत के दीपक बने हैं...आशा है यह गुरुकुल का दीपक पूरे भारत की आशाओं का दीपक बनेगा.....

-प्रधानाध्यापक,
प्रा. वि. कोड़रा,
वि. वि. भाटपार रानी, देवरिया (उ.प्र.)

सत्यार्थ-प्रकाश का हिन्दी में लिखा जाना एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना

❑ मनमोहन कुमार...

सत्यार्थप्रकाश कोई सामान्य ग्रन्थ न होकर वैदिक धर्मियों का धर्मग्रन्थ है जिसका आधार वेद और वेद की निर्भ्रान्त सत्य मान्यतायें एवं सिद्धान्त हैं। हम सत्यार्थप्रकाश को धर्मग्रन्थ इसलिये कह रहे हैं कि सामान्य व्यक्ति वेदों का अध्ययन कर उससे वह लाभ नहीं उठा सकता जो सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होता है। सत्यार्थप्रकाश में वेदों के प्राय: सभी सिद्धान्तों एवं मान्यताओं को सरल व सुबोध आर्य-हिन्दी-भाषा में ऋषि दयानन्द जी ने प्रस्तुत किया है। यदि किसी जिज्ञासु को इस संसार के उत्पत्ति-कर्ता ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करना हो तो वह सत्यार्थप्रकाश के प्रथम व सप्तम समुल्लास को पढ़कर प्राप्त कर सकता है। जीवात्मा और सृष्टि की उत्पत्तिविषयक सिद्धान्त व जानकारी भी सत्यार्थप्रकाश के सातवें व आठवें समुल्लास को पढ़कर हो जाती है। सत्यार्थप्रकाश की विशेषता यह भी प्रतीत होती है कि इसमें वेद सहित ६ दर्शनों एवं अन्य ऋषियों के वेदानुकूल सिद्धान्तों वा प्रमाणों को प्रसंगानुसार प्रस्तुत किया गया है जिससे पूरा विषय कम समय में हृदयंगम हो जाता है और पढ़े गये विषय के बारे में किसी प्रकार की शंका व भ्रम नहीं होता। ईश्वर व जीवात्मा का जितना शुद्ध व गम्भीर ज्ञान सत्यार्थप्रकाश में उपलब्ध होता है, हमारा अनुमान है कि वैसा व उतना संसार के किसी मत व पन्थ के धर्म ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं होता। सत्यार्थप्रकाश की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि विश्व के साहित्य में दुर्लभ आध्यात्मिक व सामाजिक ज्ञान एक ही ग्रन्थ में हिन्दी भाषा में उपलब्ध हो जाता है। आर्यभाषा हिन्दी का महत्व इस कारण से है कि यह आज करोड़ों लोगों की बोलचाल की भाषा है। यह सभी लोग इसी भाषा में सोचते हैं व परस्पर बोलचाल का व्यवहार करते हैं। सत्यार्थप्रकाश से पूर्व सत्यार्थप्रकाश में वर्णित विषयों का ज्ञान किसी एक ग्रन्थ को पढ़कर प्राप्त नहीं होता था। यह वैदिक साहित्य के अनेक ग्रन्थों में बिखरा हुआ था जिसे ऋषि दयानन्द ने आधुनिक काल की आवश्यकता के अनुरूप संकलित कर प्रश्नोत्तर वा वाद-विवाद शैली में उपलब्ध कराया है। इसके अतिरिक्त भी ऋषि दयानन्द ने बहुत सी ऐसी बातें सत्यार्थप्रकाश में प्रस्तुत की है जो उनकी अपनी खोज व विचार शक्ति से हमें उपलब्ध होती हैं। यदि वह यह ग्रन्थ न लिखते तो आज हम इस प्रामाणिक ज्ञान से वंचित होते और लोग स्वयं भ्रमित होकर हमें भी भ्रम में रखकर हमारा शोषण और दोहन करते और हमें वह आत्मिक सुख व शान्ति न मिलती जो सत्य ज्ञान को प्राप्त कर होती है। यह भी जान लें कि सत्यार्थप्रकाश के उत्तरार्ध के चार समुल्लास आर्यावर्तीय मतों, चारवाक-बौद्ध-जैन मत सहित ईसाई व मुस्लिम मत की समीक्षा विषयक हैं जो जिज्ञासु को सत्य मत का निर्णय करने में सहायक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल व उसके सैकड़ों वर्षों तक विश्व वा आर्यावर्त में सर्वत्र वेदों का ही प्रचार प्रसार था और वैदिक मान्यतायें एवं सिद्धान्तों का आचरण ही लोगों का धर्म होता था। इस लम्बी अवधि में विश्व की भाषा संस्कृत थी। किसी भी भाषा के उद्भव का इतिहास जानना हो तो यह उस भाषा की सबसे प्राचीन उपलब्ध पुस्तक के आधार पर जाना जा सकता है। विश्व की सबसे पुरानी पुस्तक वेद है जिसकी भाषा संस्कृत है। वेद सृष्टि के आरम्भ में तिब्बत में उत्पन्न हुए थे। उन दिनों तिब्बत में ही मानवीय सृष्टि थी। पृथिवी का शेष भाग उन दिनों मानव सृष्टि से रहित था। बाद में तिब्बत से

चलकर आर्यों ने सारी सृष्टि को बसाया है। इसका प्रमाण संसार की प्राय: सभी भाषाओं में संस्कृत से मिलते जुलते शब्दों का पाया जाना है। वेद, सृष्टि व मनुष्य परम्परा १,९६,०८,५३,११८ वर्ष पुरानी है। इससे यह ज्ञात होता है कि संस्कृत भाषा की परम्परा भी इतनी ही पुरानी है। संसार की जितनी भी भाषायें हैं, उन भाषाओं के प्राचीनतम ग्रन्थों को देखकर उन-उन भाषाओं का आरम्भ व इतिहास का अनुमान कर सकते हैं। हमारा अनुमान है कि किसी भाषा के प्राचीनतम ग्रन्थ से कुछ सौ वर्ष पूर्व ही उस भाषा का प्रचलन होना आरम्भ होता है। जो भाषा प्रचलन में आती है वह उससे पूर्व की भाषा का किंचित विकार व परिवर्तित रूप होता है। महाभारत काल के बाद संस्कृत का प्रयोग कम होने लगा था और उसके स्थान पर संस्कृत के शब्दों पर आधारित अनेक बोलियों व भाषाओं का जन्म हुआ। वर्तमान समय में जो भी भाषा व भाषायें हैं वह पहले बोलियां रही होंगी जिन्हें बाद में उन उन भाषा के विद्वानों द्वारा उस भाषा का संशोधित स्वरूप दिया गया होगा। अपने समय में प्रचलित किसी अन्य भाषा जिसे प्रयोगकर्ताओं के लिये क्लिष्ट कह सकते हैं, उससे उत्पन्न नवीन भाषा पूर्व भाषा का विकार व संशोधित रूप होती है। कालान्तर में वह पूर्व प्रचलित मुख्य भाषा गौण हो जाती है और वह परिवर्तित बोली उन्नति करके भाषा बन जाती है। भारत की जितनी भी भाषायें हैं वह सभी संस्कृत से आविर्भूत व उत्पन्न हैं। सभी भाषाओं में संस्कृत शब्दों की प्रचुरता है। कुछ भारतीय भाषाओं में पहले संस्कृत के प्रचुर मात्रा में शब्द होते थे परन्तु उस भाषा के लोगों ने संस्कृत के प्रति अपने द्वेष आदि के कारण उन भाषाओं से संस्कृत के शब्दों को शनै: शनै: हटाया है। मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा है कि अल्पज्ञ होने के कारण यह अज्ञान व भ्रम से ग्रस्त हो जाता है और अनेक अविवेकपूर्ण निर्णय भी लिया करता है।

ज्ञान को सामान्य व्यक्ति तक पहुंचाना विद्वानों का काम होता है। इसके लिये सामान्य व्यक्ति की भाषा को ध्यान में रखना आवश्यक है। यदि हमारे पास उन भाषाओं में उच्च कोटि का ज्ञान हो जिसे हम जानते नहीं है, तो उससे हम कोई लाभ नहीं उठा सकते। विद्वान हमें जो ज्ञान देते हैं वह क्षणिक व कुछ समय के लिए होता है। उसको स्थिर करने के लिये हमें पुस्तकों के माध्यम से पुनरावृत्ति करनी होती है। महाभारत के बाद वेद ज्ञान के अप्रचलित होने व उसमें अज्ञान व अधंविश्वास आ जाने का एक कारण यह भी था कि संस्कृत के जानने वाले लोग कम होते गये। वेदों के अर्थ लौकिक संस्कृत में सम्भव नहीं हैं। इसका कारण है कि वेदों के शब्द रूढ़ न होकर योग रूढ़, यौगिक वा धातुज हैं। अत: वेदों के रूढ़ अर्थों से यदि संस्कृत का विद्वान काम लेगा तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। ऐसा ही सायण व महीधर के साथ हुआ। वह वेद मन्त्रों के शब्दों के रूढ़ अर्थों को ग्रहण करने के कारण यथार्थ अभिप्राय को जान नहीं सके और मिथ्या अर्थ करके वेदों की महत्ता को समाप्त करने का काम किया। ऋषि दयानन्द ने वेदों के सत्यार्थ जानने के लिये अनेक विद्वानों व ज्ञानियों से सम्पर्क किया। अन्त में उन्हें प्रज्ञाचक्षु गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती, मथुरा का शिष्यत्व वा सान्निध्य प्राप्त हुआ। उन्होंने लगभग तीन वर्ष उनके सान्निध्य में रहकर वैदिक संस्कृत भाषा का अभ्यास किया और अपने योग बल का उपयोग करते हुए वह वेदों के सरल व यथार्थ अर्थ करने में सफल हुए। आज वेदों का सत्यार्थ लोगों को उपलब्ध है जिससे लोगों के ईश्वर, जीव व प्रकृति से सम्बन्धित सभी भ्रम व शंकायें दूर हुई हैं। ऋषि दयानन्द ने वेदों की मान्यताओं वा सिद्धान्तों को सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में प्रस्तुत कर उसे जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया है। यह ऋषि दयानन्द का 'भूतो न भविष्यति' के समान कार्य है। आज कक्षा ५ तक हिन्दी पढ़ा हुआ व्यक्ति भी वेद पढ़कर उसके सत्यार्थ को जान सकता है। यह ऋषि दयानन्द की बहुत बड़ी देन है। यदि ऋषि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

सहित वेदों का भाष्य हिन्दी में न करते तो आज देश भर में वेदों के सहस्रों नहीं अपितु लाखों की संख्या में जो विद्वान हैं, वह कदापि न होते और समाज में अज्ञान, अन्धविश्वास, पांखण्ड और रूढ़िवाद की स्थिति की हम कल्पना भी नहीं कर सकते। यह अत्यन्त वृद्धि को प्राप्त होतीं। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश को लिखकर इसके पाठक को वैदिक धर्म की श्रेष्ठता का परिचय दिया है और उसे विधर्मियों के धर्मान्तरण के षडयन्त्र से भी बचाया है। अब आवश्यकता सत्यार्थप्रकाश के जन जन तक प्रचार की है जिससे सभी आर्य व हिन्दू सत्यार्थप्रकाश पढ़कर अपने धर्म में आरूढ़ रहकर दूसरों को वैदिक धर्म की विशेषता बताकर उन्हें वेद ज्ञान को स्वीकार करने के लिए प्रेरित कर सकें।

ऋषि दयानन्द ने सन् १८७४ के उत्तरार्ध में सत्यार्थप्रकाश की रचना की थी। इसका दूसरा संशोधित संस्करण उन्होंने सन् १८८३ में तैयार किया था। आजकल सत्यार्थप्रकाश का संशोधित संस्करण ही प्रचलित है। इस सत्यार्थप्रकाश की देश को आधुनिक रूप देने में बहुत बड़ी भूमिका है। सत्यार्थप्रकाश में ईश्वर, जीव व प्रकृति का सत्य स्वरूप विद्यमान है और वेदाध्ययन की प्रेरणा करने सहित ईश्वरोपासना और अग्निहोत्र यज्ञ करने की प्रेरणा भी विद्यमान है। अज्ञान व पाखण्डों का नाश करने में भी सत्यार्थप्रकाश की मुख्य भूमिका है। देश को आजाद करने की सबसे पहले स्पष्ट प्रेरणा भी सत्यार्थप्रकाश ने ही की थी। सत्यार्थप्रकाश ब्रह्मचर्यपूर्वक वैदिक गुरुकुलीय शिक्षा सहित आधुनिक शिक्षा का भी प्रेरक है। वह सबको शिक्षा का समान अधिकार देता है। शिक्षा सबके लिये अनिवार्य व निःशुल्क सुविधाओं वाली होनी चाहिये। कोई भी निर्णय बहुमत से नहीं अपितु विद्या व गुण-दोष के आधार पर लिये जाने चाहिये। देश में एक समान आचार संहिता होनी चाहिये। धर्म का पालन निजी तौर पर किया जाना चाहिये। उसका देश व नागरिकों पर बुरा प्रभाव नहीं होना चाहिये। देश को जनसंख्या की नीति भी बनानी चाहिये जिससे भविष्य में भुखमरी व अव्यवस्था के साथ हिंसा आदि उत्पन्न न हो। मत-मतान्तरों के अनुयायियों की जनसंख्या भी समान दर से ही बढ़नी चाहिये, किसी वर्ग व समुदाय की कम व किसी की अधिक नहीं होनी चाहिये। देश में जनसंख्या वृद्धि से साधनों का अभाव होने सहित अनेक प्रश्न जुड़े हुए हैं। इसे स्थिर रखने के प्रयत्न किये जाने चाहियें। सत्यार्थप्रकाश की सत्य व अकाट्य बातों को सबको स्वीकार करना चाहिये। सत्यार्थप्रकाश को पढ़ने से मनुष्यों की बुद्धि का विकास होता है। सत्यार्थप्रकाश पढ़कर मनुष्य की विश्लेषण क्षमता में वृद्धि होती है। वह देश व समाज के हित-अहित के कारणों को जानने में समर्थ होता है। सत्यार्थप्रकाश मानव मात्र का सम्पूर्ण धर्मग्रन्थ है। हिन्दी में होने से हम इसे पूर्ण रूप से जानने में समर्थ होते हैं। सभी को सत्यार्थप्रकाश को अपना कर अपने दोनों लोकों का सुधार करना चाहिये।

- १९६ चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१

सच पूछो, तो शर में ही बसती है दीप्ति विनय की,
सन्धि-वचन सम्पूज्य उसी का जिसमें शक्ति-विजय की।
सहनशीलता, क्षमा, दया को तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके पीछे जब जगमग है।

- दिनकर

सकारात्मक सोच का अभाव समाज में बढ़ती सामूहिक आत्महत्या की वजह

❑ महेश तिवारी...✍

हम आधुनिक हो रहें हैं। धर्म को विज्ञान चुनौती दे रहा है। हम कसीदे भी पढ़ रहें वैज्ञानिक युग में जीने के। पर इन सब के भंवर में शायद हम हमारे सोचने-समझने, तर्क-वितर्क करने और आत्मचिंतन करने की प्रक्रिया को बिसार चुके हैं। पहले दिल्ली का बुराड़ी, फिर उसके उपरान्त झारखण्ड का हजारीबाग और अब जाकर पुनः झारखंड राज्य के कांके थाना इलाके के रसंडे में एक ही परिवार के सात लोगों ने सामूहिक आत्महत्या कर ली है। यह सामूहिक आत्महत्या की झारखंड में दूसरी हालिया घटना है। इसके पहले दिल्ली के बुराड़ी में ११ लोग एक ही परिवार के फंदे पर लटक गए थे, और हजारीबाग में छह लोग। ऐसे में एक के बाद एक सामूहिक आत्महत्या की घटनाएं समाज को स्तब्ध और हैरान कर रहीं हैं। अब झारखंड के रसंडे इलाके में हुई आत्महत्या को भले पहले जांच के घेरे में रखा जाएं। फिर निष्कर्ष पर पहुँचा जाएं, कि यह हत्या है या आत्महत्या। पर कुछ सवाल अब ऐसे ज्वलन्त उठ रहे, जिसके जवाब ढूढ़ने होंगे। अगर समाज में आश्रय लेती सामूहिक आत्महत्या की प्रवृत्ति पर लगाम लगानी है, तो।

वैसे देखें, तो हजारीबाग के मामले में भी पुलिस तंत्र ने यहीं कहा था, कि पहले शिनाख्त होगी, फिर निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है, कि छह लोगों ने सामूहिक आत्महत्या की या हत्या हुई। पर हजारीबाग वाले मामले में जो तीन सुसाइड नोट्स मिलें थे। वो यह बताने के लिए काफी थे, कि हमारे समाज की स्थिति अब दयनीय होती जा रही है। हजारीबाग आत्महत्या मामलें में जो सुसाइड नोट्स मिले थे, उसमें आत्महत्या का कारण बीमारी, कर्ज और दुकान बंद हो जाने जैसे थे। वैसे हमारे देश में प्रायः किसानों की आत्महत्या की खबरें सुनने को मिलती थी, पर अब सामूहिक आत्महत्या ने उसमें एक नया भयावह और डरावना अध्याय जोड़ दिया है। इतना ही नहीं ये तीन तो वर्तमान दौर में सामूहिक आत्महत्या की बड़ी घटनाएं हुई हैं, इसके अलावा ऐसी छोटी छोटी घटनाएं तो आएं दिन देश के विभिन्न कोनों में घटती रहती हैं। फिर वह चाहें उत्तरप्रदेश का कुशीनगर जिला हो, जहां के कुबेरस्थान थाना क्षेत्र के अंतर्गत कुछ समय पूर्व पिता और उसकी दो बेटियों का शव फंदे से लटका मिला या देश की मायानगरी मुंबई।

जो भले विकास के चकाचौंध में नहाई हो, पर सामूहिक आत्महत्या की आंच से वह भी अछूता नहीं। कुछ समय पहले की ही बात है, कि मुंबई के कफपरेड इलाके में एक परिवार के तीन लोगों ने आत्महत्या कर ली। वहीं बांद्रा में भी एक ही परिवार के चार लोगों ने एक साथ जान दे दी थी। अब हम अगर बात बढ़ती सामूहिक आत्महत्याओं की करेंगे। तो इसके पीछे एकाध कारण मालूम नहीं पड़ेगा। अनगिनत पहलुओं को स्पर्श करना पड़ेगा। आधुनिक होते समाज की कुंठित और रूढ़िवादी सोच का पर्दाफाश तो होगा ही। विकास और आधुनिकता का पाठ पढ़ाने वाले सियासतदां की नीतियां भी बेपर्दा होंगी। हम ज्यादा विस्तार में न जाकर सामूहिक आत्महत्या के दो-चार मामलों को आधार बनाकर ही देखते हैं, कि आखिर इन आत्महत्याओं के पीछे क्या कारण हो सकता है। तो पहले जिक्र अहमदनगर जिले के पोखरी बालेश्वर गांव की। जहां पर एक पिता ने अपनी दो नाबालिग बच्चियों का गला दबाकर हत्या करने के बाद खुद भी आत्महत्या इसलिये कर लेता है, क्योंकि इक्कीसवीं सदी के आधुनिक होते न्यू इंडिया के बावजूद बच्चियों का भरण-पोषण करने में वह अपने आप को अक्षम पा रहा था।

इससे इतर अगर बात बुराड़ी की करें, तो वहाँ पर कर्ज सामूहिक आत्महत्या का मर्ज नहीं, बल्कि धार्मिक

अंधविश्वास का बोलबाला था। अब हम क्या कहें इस आधुनिक और वैज्ञानिक होते युग को। जब दिल्ली जैसे क्षेत्र में लोग आज भी अंधविश्वास की अंधेरी रात में जीने को विवश हैं। फिर हम दूर-दराज के क्षेत्रों के विषय में क्या पूर्वानुमान लगाएं। कुछ क्षेत्र तो न्यू इंडिया के दौर में बिजली और शिक्षा की जद से बाहर हैं। फिर वहां की स्थिति क्या होगी। सहज परिकल्पना की जा सकती है। अभी तक सामूहिक आत्महत्या के दो कारण दृष्टिगत हो चुके हैं। ऐसे में अगर झारखंड के रसंडे में बीते दिनों में सात लोगों ने सामूहिक आत्महत्या की। तो उसके पीछे अन्य कारण भी हो सकते हैं। पर अगर वास्तविकता टटोली जाए, तो इन सामूहिक आत्महत्याओं के पीछे एक कारण यह भी है, कि हमारा समाज भले ही चांद और मंगल तक पहुँच जाए, सर्वोत्तम शिक्षा प्राप्त कर ले। पर उसमें सकारात्मक दृष्टिकोण और धैर्य की भावना क्षीण हो रही है।

ऐसे में हम तथ्यों का ओर अधिक गहन विश्लेषण बुराड़ी के परिवार का करें तो उस पूरे परिवार की पृष्ठभूमि में ऐस-ऐसे किरदार मिल जाएंगे। जिनके द्वारा उठाया गया सामूहिक आत्महत्या का कदम सामाजिक व्यवस्था को झकझोर कर रख देगा। इसके अलबत्ता कुछ ऐसे सवाल भी व्युत्पन्न होंगे। जिसके जवाब समाज और व्यवस्था को जल्द ढूंढने होंगे, नहीं तो **'का बरसे जब कृषि सुखाने'** की कहावत हमारे समाज के ऊपर भलीभूत होने लगेगी। अगर हम बुराड़ी में हुई सामूहिक आत्महत्या के ११ लोगों के चरित्र का डीएनए टेस्ट करें तो पहली बात यह निकलती है, कि यह घटना एक ऐसे परिवार में हुई जहां सब लोग मिलनसार और सहयोगी प्रवृत्ति के थे, आस-पड़ोस का सुख-दुख बांटने वाले थे। परिवार की एक बेटी ने विज्ञान में स्नातकोत्तर किया था, और बहुराष्ट्रीय कंपनी में नौकरी कर रही थी। फिर, आत्महत्या को कैसे मोक्ष प्राप्ति का रास्ता मान लिया? कोई तत्काल में लिया गया त्वरित फैसला नहीं रहा होगा, जो यह साबित करता है कि हमारा समाज आज भी मानसिक रुग्णता और अंधविश्वास के कूप से बाहर नहीं निकल पाया है। भले ही आज शिक्षा का प्रतिशत कागजी होकर २५ फीसद का आंकड़ा पार कर गया है। पर सोच आज भी समाज के एक अच्छे खासे तबके की उन्नीसवीं सदी की ही मालूम पड़ती है।

ऐसे में जिस समय को हम विज्ञान का युग कह रहे, अगर उस वक्त हम ऐसे धर्म का आभामंडल बना रहें जो लोगों की जान ले रहा। फिर शायद हम दिशा भटक गए हैं, क्योंकि अगर मानवता सबसे बड़ा धर्म कहा गया है। फिर हम अंधविश्वास का चोला ओढ़कर किस तरफ भागे जा रहें। यह सोचना होगा। गोपालदास नीरज जी ने एक पंक्ति कही थी, कि आदमी हूँ, मैं आदमी से प्यार करता हूँ। आज समाज में आस-पड़ोस की सम्वेदना भी खंडित हो चुकी हैं, इस कारण वश भी समाज में सामूहिक आत्महत्या जैसी प्रवृत्ति बढ़ रहीं है। तो ऐसे में अगर इक्कीसवीं सदी के विज्ञान पर आधारित समाज में सामूहिक आत्महत्या पर लगाम लगाना है। तो ऐसी शिक्षा व्यवस्था पर जोर देना होगा, जो सही-गलत की पहचान करना सिखा सकें। समाज को अपने सोचने का नजरिया बदलना होगा। समाज से जो अपनापन दूर हो रहा, उसकी तारतम्यता पुन: स्थापित करनी होगी। छद्म धर्म-व्यवहार के नाम पर समाज को ठगने वालों की दुकान बंद करानी होगी। कर्मवादी व्यवस्था का जिक्र हमारी संस्कृति का आधार है, उस पर अमल करना होगा। ढोंगी कठमुल्लों और बाबाओं की फौज से देश को आजाद करना होगा। इसके अलावा सरकार की नीतियों में पूर्णरूपेण फेरबदल होना चाहिए, क्योंकि नीतियां तो हैं। फिर भी समाज में एक बड़ा तबका हत्या या सामूहिक आत्महत्या गरीबी के कारण कर बैठता है। इन सब के अलावा सकारात्मक सोच समाज के लोगों को खुद विकसित करनी होगी। साथ में यह समझना होगा, कि भौतिक सुख ही सबकुछ नहीं हो सकता। ऐसे में जो लोग भौतिक सुख के अभाव में सामूहिक रूप से जीवनलीला समाप्त करने की फिराक में रहते हैं, वे एकबार भूटान के बारे में जरूर पढ़ें, फिर कुछ निर्णय लें।

- गोंडा (उ.प्र.)

एक याचना प्रकृति के नाम

❑ ब्र. सूर्यप्रताप आर्य...✍
-शास्त्री द्वितीय वर्ष
गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

फ़रमाइश तुम्हारी फ़रमान फ़रियाद मानो पर ये फ़र्ज है हमारा,
प्रचलित प्रकृति की प्रतिभा का पालन करें फ़र्ज है हमारा॥

कावेरी की कल-कल की कलरव कम से कम हो चली,
गंगा की गर-गर सी गूँज फिर सें गायब हो चली॥१॥

वृक्ष कटते तो विषाद होता, विष्किर वृन्द व्यथित हो विहायस को उड़ चले,
हिमालय का हृदय और हुस्न हेम से वर्ण हेय होकर उड़ चले॥२॥

संगमरमर का ताजमहल धुएँ की धुंध से धुंधला हो गया,
भारत की भद्रता भव में गिरी और मटमैला हो गया॥३॥

मृग, मृगकेसरी का जन जश्न से जनाजा निकाल रहे,
नित नये नये शिकारी प्रकृति का कुपोषण कर रहे॥४॥

वन का विनाश बहुत हुआ कुछ रक्षा इसकी कर लो,
वृक्ष काटे कोई तो चिपक 'चिपको' को ध्यान कर लो॥५॥

जल ही जीवन 'आपो सर्वस्य भेषजम्' वेद में है बतलाया,
'परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः' ऐसा पञ्चतन्त्र में है बतलाया॥६॥

जीवन जीना है तो नित नये वृक्ष का आरोपण करो,
नदियाँ स्वच्छ रखकर कुछ प्रकृति पर उपकार करो॥७॥

पथ के पथिक को पथ में वृक्ष ही एक सहारा है,
जल न हो तो जीवन का नदिया ही एक सहारा है॥८॥

एक शासक ही शासन शासित करते हुए शुद्ध भारत बना सकता नहीं,
स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत का सपना साकार हो सकता नहीं॥९॥

वृक्ष लगा, जल बचाकर अपना भविष्य सँवार लो,
गौरव से गौरवान्वित हो गर्व से कल सँवार लो॥१०॥

अंकित करो या संकल्प लो, प्रदूषण हम करेंगे नहीं,
प्लास्टिक का बहिष्कार करो प्रयोग हम उसका करेंगे नहीं॥११॥

राय मेरी **सुमेधा** जगाओ अन्यथा **देवेन्द्र** रूठ जायेंगे,
हुन पूरित देश मेरा आपदग्रस्त होगा, सब मर जायेंगे॥१२॥

लक्ष्मीनाथ से ये **प्रार्थना प्रकृति के लिए सूर्यप्रताप** करता है,
हवन कर **उपासना** करो ईश की, हवन पर्यावरण शुद्ध करता है॥१३॥

अन्ततोगत्वा मै तुमसे सिर्फ यही विनीत विनती करूंगा,
फ़रियाद मेरी मानो या ना मानो प्रकृति की रक्षा मैं करूंगा॥१४॥

तो फिर हिन्दी के प्रति ये बेगानापन क्यों?

❑ देवेन्द्रराज सुथार...✍

आज भारत ही नहीं विदेश भी हिन्दी भाषा को अपना रहे हैं तो फिर हम देश में रहकर भी अपनी भाषा को बढ़ावा देने के बजाय उसको खत्म करने पर तुले हैं? विश्व में अनेक देश जैसे- इंग्लैंड, अमेरिका, जापान और जर्मन आदि अपनी भाषा पर गर्व महसूस करते है तो हम क्यों नहीं? चीन की अर्थव्यवस्था भारत से ३ गुनी बड़ी है, आज वहां बिजली, पानी, आवास, चिकित्सा, रोजगार अथवा गरीबी जैसे मुद्दे काफी हद तक न के बराबर हैं। भारत १९४७ में आजाद हुआ और चीन जो जापान के साथ द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका में और आतंरिक संघर्षों के कारण लगभग बर्बाद हो गया था, वहां १९४९ में कम्युनिस्ट शासन स्थापित हुआ। गरीबी, कुपोषण, अनियन्त्रित जनसंख्या, महामारियां और खस्ती आर्थिक व्यवस्था किसी भी देश के लिए बड़ी चुनौती थीं लेकिन चीन ने दृढ़ता से सबका मुकाबला किया। आज चीन की तरक्की की कहानी सबके सामने है। सिर्फ अपनी मातृभाषा मैंडरिन और कॅन्टोनीज को ही आधार मानकर और बिना अंग्रेजी शिक्षा के अपनी तकनीक और शिक्षण व्यवस्था को दृढ़ता से संचालित कर के चीन ने मिसाल रखी है।

चीन की भाषा लिखना-पढ़ना हिंदी लिखने-पढ़ने से कहीं अधिक कठिन है किंतु चीन में ९९% साक्षरता दर है और यह साक्षरता दर उन्होंने अंग्रेजी को या किसी अन्य भाषा को माध्यम बनाकर नहीं पाई है। भारत में साक्षरता दर महज ६६% के आसपास है, जिसमें अनपढ़ों की बड़ी फेहरिस्त हैं और लगभग ३०-३५% आज भी अपना नाम लिखना पढ़ना भी नहीं जानते पर पश्चिमी विकार से बुरी तरह ग्रसित है। आज अगर चीन अमेरिका और अन्य यूरोपीय देशों के लिए एक बड़ी चुनौती बनकर खड़ा है तो अपनी भाषा अपनी मौलिक पहचान खोकर नहीं, उसे आधार बनाकर खड़ा है। फिर हमारे देश की अनपढ़ फौज अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था को अपनाकर खुद को और गर्त में धकेल रही है, मैं किसी भाषा का विरोधी नहीं हूं, अंग्रेजी एक अंतरराष्ट्रीय वाद-संवाद की भाषा व माध्यम है और अन्य विषयों की तरह ही एक महत्वपूर्ण विषय जिसकी बेहतर जानकारी सभी बच्चों को दी जानी चाहिए किंतु अपनी मौलिकता अपनी पहचान को मिटाकर आप अपने हित की बात तो कर सकते है लेकिन, राष्ट्र हित और संवेदना, तहजीब, संस्कार फिर यह बातें खो ही जानी हैं।

आज हिन्दी पूरी तरह उपेक्षित है। हमारे अधिकतर सांसद व मंत्री हिन्दी भाषी होते हुए भी संसद में प्रायः अंग्रेजी में ही वक्तव्य देते हैं। जबकि उनका कर्तव्य है कि राष्ट्रभाषा का मान बढ़ायें। इसी प्रकार ऐसे कुछ लोग, जिन्हें भले ही अंग्रेजी समझ में न आती हो, पर शादी समारोह व उत्सवों के निमंत्रण-पत्र अंग्रेजी में छपवाना अपना सम्मान समझते हैं। आज हमारी युवा पीढ़ी भी अंग्रेजी के मायाजाल में फंसकर दिग्भ्रमित होकर अपने देश की भाषा 'हिन्दी' से कटती जा रही है। पर देखा जाय तो यह दोष इस पीढ़ी का नहीं है, दोष है शिक्षा नीति बनाने वालों का। स्वतंत्रता के ७० वर्षों के बाद भी हमारे देश में लार्ड मैकाले द्वारा प्रतिपादित शिक्षा नीति में दीक्षित लोग भारतीयता से कटते चले जा रहे हैं। लार्ड मैकाले के ये दत्तक पुत्र 'हिन्दी' की उपेक्षा कर राष्ट्र का अपमान कर रहे हैं। संविधान के अनुसार हिन्दी राजभाषा घोषित की गई थी। यदि सरकार की इच्छा शक्ति रही होती तो उसी समय से हिन्दी पूरी तरह राजकाज की भाषा बन गई होती, लेकिन तत्कालीन सरकार ने यह कार्य किया ही नहीं। केन्द्रीय व राज्य सरकारों व सरकारी संस्थाओं द्वारा हर वर्ष १४ सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है, यह महज एक औपचारिकता भर रह गई है। केवल एक दिन हिन्दी

के बारे में भाषण होता है फिर वर्ष भर अंग्रेजी में कार्य होता है। सच्चे मन से हिन्दी को आगे बढ़ाने का कार्य नहीं होता।

हमें समझना होगा कि भाषा का बहुत बड़ा मार्केट होता है। इसमें सिर्फ किताबें उपन्यास ही नहीं, उद्योग, कला, विज्ञापन, अखबार, टीवी कार्यक्रम, फिल्में, पर्यटन, संस्कृति, धर्म, खान-पान, रहन-सहन, विचारधारा, आंदोलन और राजनीति भी शामिल है। अगर एक वर्ष के लिए ही भारत जैसे विकासशील देश अंग्रेजी पर रोक लगा दें तो अमेरिका और इंग्लैंड की अर्थव्यवस्था चरमरा सकती है। भारत में अंग्रेजी जितनी फायदेमंद भारतीयों के लिए मानी जाती है, उससे हजार गुना ज्यादा लाभ अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा के लिए भारत से कमा लेती है। कभी सोचा है कि अपनी विशाल प्राचीन संस्कृति के रहते भी भारत के लोग एक पिद्दी से देश इंग्लैंड को महान क्यों मानते हैं, जबकि उसके पड़ोसी फ्रांस, जर्मनी, हॉलैंड, स्पेन, पुर्तगाल, इटली इत्यादि उसकी ज्यादा परवाह नहीं करते। इसका कारण है, हमने इंग्लैंड की भाषा को महान मान लिया, लेकिन उसके पड़ोसियों ने नहीं माना।

आज चीन, रूस, जर्मनी, जापान पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अमेरिका से प्रतिद्वंद्वीता कर रहे हैं, उसी विज्ञान और तकनीकी में, जिसमें अंग्रेजी नहीं बोलने-लिखने वाले समाज पिछड़ जाने चाहिए थे। इनसे यह स्पष्ट है कि अंग्रेजी का ज्ञान होना तरक्की के लिए जरूरी तो नहीं है। लेकिन फिर भी हमारे देश के कुलीन 'इलीट' बार-बार अपनी मातृभाषा बचाने के बहाने हिंदी का विरोध क्यों करते है, जबकि अंग्रेजी के खिलाफ एक शब्द भी वो सुनना नहीं चाहते। इसका कारण है, हिंदी ने देश के सभी प्रान्तों के गरीबों को ताकत दी है, हिंदी के सहारे पूर्वोत्तर के गरीब बंगलुरु या हैदराबाद में काम कर रहे हैं, और ओडिशा व बंगाल के गरीब मुम्बई या सूरत में काम कर रहे हैं और गरीबी से बाहर आ रहे हैं। उसी तरह ग्रामीण परिवेश के लोग हिंदी के सहारे अन्य प्रदेशों में व्यापारिक सम्बन्ध बनाकर अपनी आर्थिक और सामाजिक स्थिति उन्नत कर रहे हैं। अंग्रेजी के सहारे ऊँची कमाई वाली नौकरियों, पदों और काम-धंधों पर एकाधिकार रखने वाले वर्ग को हिंदी बोलने वाले ऐसे 'छोटे' लोगों की प्रगति सहन नहीं हो रही है। इसी कारण कभी बेंगलुरु के मेट्रो स्टेशनों पर कन्नड़ व अंग्रेजी के साथ हिंदी में साइनबोर्ड लगाने का विरोध होता है और कभी ओडिशा की पूर्व मुख्यमंत्री के सांसद बेटे को हिंदी में पत्र मिलने पर बहुत तकलीफ होती है।

अगर हम हिंदी के लिये गम्भीर होकर हिंदी भाषा को उसका देश मे सर्वोच्च स्थान दिलाना चाहते है तो इसके लिये हमारे राजनैतिक नेतृत्व को राष्ट्रभाषा के रूप में सभी संवैधानिक संस्थाओं को प्रथम भाषा के रूप में हिंदी को अपनाने पर जोर देना होगा और राष्ट्र के तीन प्रमुख स्तम्भ कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका को अंग्रेजी को एलीट क्लास समझने की मानसिकता से बाहर आना होगा। सभी राज्यों के उच्च न्यायालय तक उस राज्य के राजभाषा और देश के राजभाषा में सुनवाई होनी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी हो बहस तथा फैसले हो। सभी फैसले की कॉपी उनकी भाषाओँ में देनी चाहिए। जिस दिन भारत का सर्वोच्च न्यायालय नीतिगत फैसले हिंदी में देना शुरू कर देगा, आम नागरिको में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता का स्तर आज के मुकाबले ज्यादा बढ़ जाएगा। क्योंकि अभी जनहित के अनेकों फैसले नौकरशाही की निष्क्रियता के कारण फाइलों में धूल खाते रहते हैं। यही हाल शिक्षा के क्षेत्र में है जहां सिर्फ अंग्रेजी में पिछड़े होने के कारण कई प्रतिभाएं निम्नतर समझने की मानसिकता के साथ दम तोड़ देती है। जबकि खेलों में मेट्रो शहरों की तुलना में छोटे शहरों से आने वाले खिलाड़ी खुद को बेहतर सिद्ध कर रहे है। जरूरत है इच्छाशक्ति की और जब आज हिंदी भाषी प्रधानमंत्री देश के पास है तो आजादी के ७० वर्ष बाद भी हिंदी को सम्मान नहीं मिलेगा तो फिर कब मिलेगा?

-गांधी चौक, आतमणावास, बागरा, जिला-जालोर (राजस्थान)-३४३०२५

आदर्श पिता का स्वरूप

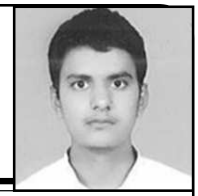

❑ ब्र. आकाश आर्य ...✍

भारतवर्ष की संस्कृति में तीन लोगों को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। ये तीन लोग माता, पिता और आचार्य हैं। यज्ञोपवीत के धागे भी हमें माता पिता और आचार्य के ऋण से उऋण होने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। यदि हम केवल पिता की ही बात करें तो संसार में होने वाले सामान्य जनों से पिता अत्यधिक विशिष्ट है। उणादिकोष में भी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी पिता शब्द की वृत्ति लिखते है कि- **पाति रक्षतीति पिता** अर्थात् जो पालन और रक्षण करता है वह पिता कहलाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में लिखते है कि- जो विद्वान् लोग मनुष्यों को ज्ञान चक्षु देकर उनके अविद्या रूपी अन्धकार के नाश करने वाले है, उनको पितर कहते है। वास्तव में संसार में जो हमें किसी भी श्रेष्ठ विद्या से परिपूर्ण करें वह ही पिता कहलाता है। आचार्य चाणक्य भी अपनी चाणक्य नीति में पांच प्रकार के पिता का वर्णन करते हुए लिखते है-

जनिता चोपनेता च यस्तु विद्यां प्रयच्छति।
अन्नदाता भयत्राता पञ्चेते पितरः स्मृताः।।

उत्पन्न करने वाला अर्थात् जो हमें जन्म देता है। उपनयन संस्कार कराने वाला, विद्या रूपी अमृत से सींचने वाला, अन्न को देने वाला और भय से रक्षा करने वाले को भी पिता कहा गया है। हमें इससे ज्ञात हो जाना चाहिए कि संसार में केवल मात्र जन्म देने वाले ही पिता नहीं होते अपितु जो हमें श्रेष्ठ विद्या से परिभूषित करते हैं वह भी पिता कहाते है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखते है कि- वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान् है जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हो। इससे ज्ञात होता है कि हमारे जीवन में पिता का कितना महत्व है। यदि किसी के पिता ही ज्ञानहीन होंगे तो निश्चय ही वह अपनी सन्तान को भी ज्ञान देने में परिपूर्ण नहीं होंगे। इसी श्रृंखला में स्वामी दयानन्द जी तृतीय समुल्लास में लिखते है कि- सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म, और स्वभाव रूपी आभूषणों को धारण करना ही माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। इस वाक्य से भी बालक के संस्कार में पिता की भूमिका का पता चलता है क्योंकि संस्कार का मूल स्त्रोत माता, पिता और आचार्य है।

यजुर्वेद के मन्त्र की ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में व्याख्या करते हुए स्वामी दयानन्द जी पिता के कर्तव्यों का व्याख्यान करते हुए लिखते है कि -

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्त्रुतम्।
स्वधा स्थ तर्पयत मे पितृन्।।

पिता वा स्वामी अपने पुत्र पौत्र, स्त्री और नौकरों को इस प्रकार आज्ञा देवें कि जो-जो हमारें मान्य पिता पितामहादि, माता-मातामहादि और आचार्य तथा इन से भिन्न भी विद्वान लोग जो अवस्था व ज्ञान में बड़े और मान्य करने योग्य है, तुम लोग उनकी उत्तम उत्तम जल रोग नाश करने वाले, उत्तम अन्न सबप्रकार के उत्तम फलों के रस आदि पदार्थों से नित्य सेवा किया करों कि जिससे वें प्रसन्न होकर तुम लोगों को सदा विद्या देते रहे। वस्तुतः इस प्रकार के विचारों से हमारे शास्त्र परिपूर्ण है परन्तु महत् आश्चर्य है कि आजकल संसार में लोगों ने नीचतम हरकतों

को करने में सारी की सारी हदें पार कर दी है अभी अभी कुछ दिनों पहले ही समाचारपत्र में एक समाचार प्रकाशित हुआ था कि एक पत्नी ने अपने पति की हत्या कर दी थी जब उससे पूछा गया कि आपने अपने पति की हत्या क्यों की तो उसने बताया कि मेरा पति मेरी पांच वर्ष की नन्ही सी बेटी के साथ काफी दिनों से बलात्कार कर रहा था। यदि एक पिता ही अपनी पुत्री के साथ बलात्कार कर सकता है तो दूसरों से क्या अपेक्षा करना? हमें इस प्रकार की घटना से ही ज्ञात हो जाना चाहिए कि हमारा परिवेश किस संस्कृति को धारण कर रहा है। प्रिय पाठकों! जिस देश की संस्कृति में विकार उत्पन्न होने लगता है तो कुछ ही वर्ष में उस देश का विनाश हो जाता है और भारत की संस्कृति में भी धीरे-धीरे विकार उत्पन्न होने लग गया है तो हमें इससे ज्ञात कर लेना चाहिए कि भारत भविष्य में विकास करेगा अथवा पतन को प्राप्त होगा। अन्त में मैं राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी के इस पद्य से प्रेरणा लेते हुए भविष्य में सम्यक् सुदृढ़ एवं सार्थक पथ के पथिक बनने का निवेदन करता हूँ -

निज पूर्वजो का वह अलौकिक सत्य शील निहार लो,
फिर ध्यान से अपनी दशा भी एक बार विचार लो।
जो आज अपने आपको यो भूल हम जाते नहीं,
तो ये काभी सन्ताप-मूलक शूल हम पाते नहीं।।

- शास्त्री तृतीय वर्ष,
गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

कवियों की कविता

❑ ब्र.गगन आर्य...✍

जिसमें काव्य की गहराई है वह कविता कहलाती है,
जिससे इन्सान बनने की ख्वाइश है वह कविता कहलाती है।
जो सबको जोशीला बनाती है वह कवियों की कविता है,
जो सबको हर्षित करती है वह कवियों की कविता है,
जो सबका मन हर लेती है वह कवियों की कविता है,
जो सबका दर्द बाँट लेती है वह कवियों की कविता है।।
सबको ज्ञान दिलाती है वह कविता कहालाती है,
उम्मिदो का उदय करती है वह कविता कहलाती है।
कवियां के काव्य में ही पूर्णानन्द भरा है,
कवियों के काव्य में ही सुखदुख भाव भरा है,
कवियों की कविता में ही दृढ विश्वास भर है
कवियों की कविता में शिष्टाचार भरा है।
कवियों को वह कविता उलझने सुलझाती है,
उम्मीदों का दिया जलाकर वह बस में कर लेती है।
वह कविता उन कवियों की आय नहीं होती है,
जिस कविता में काव्य की गहराई की परछार नहीं होती है,
वह काव्य जो दिल की गहराई को उद्गार करता है,
वह काव्य जो सबको शिष्ट-विनीत बनाता है।।
होसले बनाकर वह जब उडान भर लेती है,
उपने लक्ष्य को पाकर वह सफलता प्राप्त कर लेती है।
कवि अपनी कविता से सबकों अपना लेता है,
अपने दिल की गहराई को सबमें बाँट देता है,
गगन लिखता है कवियों के लिए यह कविता है,
उनको दृठ विश्वास दिलायेगी यह वह कविता है।।

पूर्व मध्यमा प्रथमवर्ष
गुरुकुल पौन्धा देहरादून

आप आपने लेख, कहानी, कविता, संस्मरण, ग्रन्थ- समीक्षा व सुझाव हमें ई.मेल - arsh.jyoti@yahoo.in कर सकते हैं।
www.pranwanand.org

पलायन से पीडित उत्तराखण्ड

❑ ब्र. त्रिजकिशोर आर्य...

उत्तराखंड के पहाड़ों से पलायन आज एक बड़ी और विकराल समस्या का रूप धारण कर चुका है। इस समस्या से निपटने के लिए यदि कोई उपाय नहीं किया गया तो उत्तराखण्ड की संस्कृति और सभ्यता पर भी बहुत बड़ा खतरा मंडरा सकता है। उत्तराखंड में कोई भी सरकार और राजनैतिक दल इससे निपटने के लिए ठोस उपाय नहीं कर रही है। जिस कारण से यह पलायन का मुद्दा महज एक राजनैतिक मुद्दा नहीं रह गया है बल्कि सामाजिक जन जागरण, मानवाधिकार के मूल्यों की रक्षा और अपनी सांस्कृतिक पहचान खोने के संकट से जुड़ा राष्ट्रीय मुद्दा बनता जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों से चाहे वो स्थानीय पहाड़वासी हों या दूरदराज इलाकों में रहने वाले प्रवासी जन पलायन के अभिशाप की पीड़ा झेलने के लिए विवश हैं। आज सभी को पलायन की चिन्ता है किन्तु किसी को भी पलायन का चिन्तन नही। मन है पहाड़ों में जाकर रहने का किन्तु मनन नही।

पलाय के कारणों, मूल समस्याओं और निदानादिसमाधान को लेकर आजकल सोशल मीडिया में एक जोरदार बहस छिड़ी हुई है। सवाल यह भी उठाए जा रहे हैं कि इस भारी संख्या में हो रहे पलायन के लिए कौन जिम्मेदार है? उत्तराखण्ड सरकार के अर्थ एवं सांख्यिकी विभाग द्वारा हाल ही में जारी सरकारी आंकड़े बताते हैं कि जब से नए राज्य का गठन हुआ है तब से लेकर आज पर्यन्त उत्तराखंड के २ लाख ८० हजार ६१५ मकानों पर ताले लग चुके हैं। और एक गैर सरकारी संस्था 'पलायन एक चिंतन' के द्वारा तैयार किए गए आंकड़ों के अनुसार राज्य बनने के बाद १८ सालों में ३२ लाख लोगों ने पहाड़ से पलायन किया है। सरकार और उत्तराखण्ड की विपक्षी पार्टियां इस पलायन और विस्थापन पर मौन साधे हुए हैं किन्तु सोशल मीडिया के जागरूक नागरिकों और सामाजिक संस्थाओं की ओर से इस समस्या पर गहन चिंता प्रकट की जा रही है। नए राज्य की संकल्पना उत्तराखण्ड राज्य के चिर प्रतीक्षित लोक कल्याणकारी सपनों को पूर्ण करने और पलायन को रोकने के उद्देश्य से हुई थी न कि इसे और विकराल रूप देकर यहां से आम जनता को भगाने के लिए। आज हमारे राजनेताओं ने उत्तराखंड के राज्य प्रशासन को लूट खसोट मचाने वाले संगठित माफियों के हाथों गिरवी रख दिया है। यही कारण है कि अब यह पलायन का मुद्दा महज एक राजनैतिक मुद्दा नहीं रह गया है बल्कि सामाजिक जन जागरण, मानवाधिकार के मूल्यों की रक्षा और अपनी सांस्कृतिक पहचान खोने के संकट से जुड़ा राष्ट्रीय मुद्दा बनता जा रहा है।

आज उत्तराखण्ड तो क्या सम्पूर्ण भारतवर्ष के राजनेताओ के मानसपटल पर भ्रष्टाचार एक अत्यन्तभयङ्कर समस्या का रूप धारण करके बैठा है। सभी राजनेता लोभ और कामासक्त होकर सम्पूर्ण राष्ट्र को धराशायी करने में लगे हुए है। सभी स्थानो पर खाद्य वस्तुओं में न जाने किन-किन अखाद्यवस्तुओ का मिश्रण और अनुचित साधन से धनोपार्जन इत्यादि विविध रूपो में भ्रष्टाचार सम्पूर्ण समाज में असामंजस्यता उत्पन्न कर रहा है। यह कटु सत्य है कि लोग मजबूरी से या अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा-दीक्षा दिलाने की वजह से पलायन कर रहे हैं। लेकिन सवाल यह भी महत्त्वपूर्ण है कि उत्तराखंड राज्य बनने के बाद ३२ लाख लोग पलायन कर चुके हैं। राज्य बनने से पहले भी पलायन होता था मगर इतनी अधिक मात्रा में नही, घर का मुखिया रोजगार के लिए जाता था और उसका परिवार घर में ही खेती बाड़ी करके उदरपूर्ति करता था। उसी खेती से ७ से ८ लोगों का पालन पोषण के साथ विवाह जैसे खर्चों का भी वहन कर लेता था। आज उसी खेती में असंख्य जँगली सुअरों का राज होता जा रहा

है किन्तु जब से उत्तराखंड राज्य बना है तभी से यहां आम जनता का उत्तराखण्ड की भ्रष्ट सरकारों से विश्वास उठ गया है। अन्धविकास की योजनाओं के कारण चारों ओर प्राकृतिक आपदाओं का कहर बरस रहा है किन्तु राज्यप्रशासन इस ओर कोई ध्यान नही दे रहा है।

यदि आज उत्तराखंड के पहाड़ों से लोगों को पलायन करने से रोकना है तो सबसे पहले जिन स्थानों में अधिक संख्या में पलायन हो रहा है उन स्थानों की ओर फिर से ध्यान देकर सभी सुविधाओं से युक्त करने की जरूरत है। अगर सभी स्थानों को मूलभूत सुविधाएं प्रदान की जाए जैसे सभी गावों और नगरो को पक्के सड़क मार्ग से जोड़ा जाए तथा बिजली व पानी जैसी बुनियादी जरूरतों की पूर्ति हो। हर गांव में कम से कम एक प्राथमिक चिकित्सालय तो आवश्यक रूप से हो जिसमें तत्कालिक और आवश्यक सेवा प्रदान करने हेतु एक डॉक्टर मौजूद हो तथा दवाइयों की उचित व्यवस्था हो। दुर्गम इलाकों में जहां छोटे-छोटे बच्चे कई किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल पहुंचते हैं उन गांवों के छोटे-छोटे बच्चों के लिए गांव में ही स्कूल खोले जाएं तथा स्कूल भवन सुरक्षित हो , शौचालय, मिड डे मील, कंप्यूटर, आधुनिक उपकरणों की जानकारी, अनुशासित रूप से पढ़ाई किताबों की व्यवस्था हो। बच्चों को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था अर्थात् कम्प्युटर आदि सभी इलेक्ट्रॉनिक संसधानों से भी अवगत कराया जाए। तो इससे पहाड़ों में बंद होते स्कूलों में पुन: रौनक लौट सकती है क्योंकि अगर बच्चो को सारी सुविधाएं गांवों में ही मिलने लगेगी तो फिर माता-पिता और अपनी जन्मभूमि को छोड़कर बच्चों की पढ़ाई के लिए बाहर क्यों जाएंगे। अत: अन्त में मैं यहीं निवेदन करना चहाता हूँ कि यदि उत्तराखण्ड से पलायन को रोकना है तो पुन: सरकार को उत्पन्न हो रहीं सर्व समस्याओं की ओर ध्यान देकर प्रत्येक समस्या के निवारण के लिए सर्वदा उद्यत रहना चाहिए तभी पलायन की जडे कट सकती है। और पुन: उत्तराखण्ड उन्नति को प्राप्त हो सकता है।

-उत्तरमध्यमा द्वितीय वर्ष
गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

सफलता | एशियन गेम्स में 10 मीटर एयर राइफल में सिल्वर मेडल जीता है दीपक कुमार ने

धाराप्रवाह संस्कृत बोलते हैं रजत पदक विजेता दीपक

जागरण विशेष

जागरण संवाददाता, देहरादून: 18वें एशियाई खेलों में 10 मीटर राइफल स्पर्धा में भारत के लिए सिल्वर मेडल जीतने वाले दीपक कुमार धाराप्रवाह संस्कृत बोलते हैं। आज भी दीपक देहरादून आकर गुरुकुल में रहकर योगाभ्यास करते हैं। दीपक मूलरूप से दिल्ली के रहने वाले हैं।

इसे संयोग ही कहा जाएगा कि आज ही के दिन 2001 में दीपक ने देहरादून के पौंधा स्थित गुरुकुल में प्रवेश लिया था। उन्होंने यहीं से 2001 में शास्त्री की पढ़ाई शुरू की। 2001 में दीपक कुमार के सहपाठी और वर्तमान में गुरुकुल में सेवा दे रहे शिवदेव आर्य ने बताया कि दीपेंद्र (सहपाठियों में इसी नाम से पुकारे जाते हैं) धाराप्रवाह संस्कृत बोलते हैं। इसके अलावा उन्हें सामदेव के करीब एक हजार मंत्र याद हैं। 2007 तक उन्होंने गुरुकुल में रहकर ही पढ़ाई की थी। इसके बाद उनकी एयरफोर्स में नौकरी लग गई।

गुरुकुल से ही शुरू की निशानेबाजी: सहपाठी शिवदेव आर्य का कहना है कि दीपेंद्र ने गुरुकुल में रहकर ही निशानेबाजी शुरू की थी। उन्होंने बताया कि 2004 में एक दिन गुरुकुल में पूर्व खेल मंत्री नारायण सिंह राणा आए थे। उन्होंने कहा कि आप लोग योगाभ्यास करते हैं तो आपको निशानेबाजी में भी हाथ आजमाना चाहिए। बस ये बात दीपेंद्र के दिल में घर कर गई। उन्होंने उस दिन से निशानेबाजी शुरू कर दी। दीपेंद्र रोजाना गुरुकुल से पौंधा शूटिंग रेंज पैदल जाते थे और अभ्यास करते थे।

दीपेंद्र के लिए आई थी गुरुकुल में पहली राइफल: उन्होंने बताया कि गुरुकुल में पहली राइफल दीपेंद्र के लिए आई थी। गुरुकुल के प्रबंधक आचार्य डॉ. धनंजय और चंद्रभूषण व्यक्तिगत खर्चे पर उनके लिए राइफल लेकर आए थे।

देहरादून की पौंधा स्थित गुरुकुल की रेंज में अभ्यास करते एशियाई खेलों में सिल्वर मेडल जीतने वाले दीपेंद्र कुमार बाएं से पहले • फाइल फोटो

रात में जाग-जागकर करते थे प्रेक्टिस

सहपाठी शिवदेव आर्य ने बताया कि दीपेंद्र काफी जुनूनी थे। रात को अक्सर वो जाग-जागकर राइफल उठाकर प्रेक्टिस किया करते थे। उसी का नतीजा है कि आज दीपेंद्र ने एशियाई खेलों में सिल्वर मेडल जीतकर भारत का नाम रोशन किया है।

तुम हो मेरे हमवतन...

❑ ब्र. मानस रञ्जन विशि...

तुम हो मेरे हमवतन पूज्य तव नक्से कदम,
राष्ट्र के तुम मार्गदर्शक तुम ही माली तुम चमन।

इस चमन के पुष्प हम हैं करते निशदिन याचना,
मन प्रफुल्लित स्नेह पूरित ज्ञान जल से सींचना,
हम तो घट तुम रचने वाले जैसे रच दो वैसे हम॥१॥
तुम हो मेरे हमवतन...

तु चणक के पुत्र या फिर पूज्यवर मम द्रोण हो,
शिष्य मैं तब चन्द्र अर्जुन वर दो मुझको मौन क्यों,
तुम करो संकल्प जो फिर देव भी कर दे नमन॥२॥
तुम हो मेरे हमवतन...

पा सकूं वरदान तुमसे राष्ट्र को गतिमान कर दूँ,
देश को उज्ज्वल भविष्य अश्रुओं में गान भर दूँ,
कर्मपथ का बन पथिक मैं चीर दूं घनीभूत तम॥३॥
तुम हो मेरे हमवतन...

मानता हूँ धृष्ट मैं हूँ जैसा भी हूँ आपका,
तुम संवारो या बिगाडो ये भविष्य राष्ट्र का,
भूपति भी भूलुठित हों क्रोधरक्तिम यदि नयन॥४॥
तुम हो मेरे हमवतन...

आपने अनदेखा जिसको या उपेक्षित कर दिया,
मानता जीवन का गागर उसका विष से भर दिया,
अपनयन कर दोषविष का कर दो अमृतपूर्ण मन॥५॥
तुम हो मेरे हमवतन...

आपके हैं पुत्र हम बस देह से जन्मा नहीं,
मन का रिश्ता देह के रिश्ते से ज्यादा हर कहीं,
राजनैतिक विष को पीकर दे दो उत्तम विद्या धन॥६॥
तुम हो मेरे हमवतन...

जानता हूँ आज रिश्तों का विखण्डन हो गया,
आपका देवत्व घायल शिष्य आहत हो गया,
देश के रक्षा हेतु लो दुर्धर्ष कलम॥७॥
तुम हो मेरे हमवतन...

-गुरुकुल गोतमनगर, नई दिल्ली

अरे अब तो बजालो धर्म-संस्कृति बचाने का बिगुल

❑ ब्र. दिनेश आर्य...

चल रही देश बटबारे की बात
बिगड़ रहे संस्कृति के हालात।
चुभ रहे माता की छाती में त्रिशूल,
अरे अब तो बजालो धर्म-संस्कृति बचाने का बिगुल।

काल के कपाल में लिखी हुई है यह कथा,
इति वृत्त से है ज्ञात होती दु:ख दर्द की व्यथा।
उस व्यथा की चिन्ता क्या तब से हमें हैं हो रही,
निज मान-गौरव को भूलाकर हिन्दू जाति सो रही,
स्वहृदय के रेखा पर है पड़ रहा यह भारी शूल,
अरे अब तो बजालो..... ॥१॥

सुनीथ होकर शीघ्रता से सुधारो अपनी भूल को,
सम्पूर्ण निज सम्प्लव मिटाकर सिंचो अपने मूल को,
अनुदिश-दिशा में घूमकर सुदृढ़ करो निजसंगठन,
अनीर्षु होकर संस्कृति को प्रस्तार करने का यातन,
वध्रिका बनकर भूपटल को बेचने का न करो अब भारी भूल
अरे अब तो बजालो..... ॥२॥

जिस देश में बढ़ रहे विधर्मी धर्म ठेकेदारी के,
कुहकवृत्तिका से कर रहे वे कार्य नितगद्दारी के,
हत भाग्य हिन्दू जाति का निश निन्द में जो सो रही,
कालित सम बनकर नित निज क्रोडकान्ता खो रही,
जन श्रेष्ठ जागों अब न दो तुम झोंकने आँखों में धूल।
अरे अब तो बजालो..... ॥३॥

निज देश में निज बन्धुओं को रहने की न ठोर है,
घूसपैठियों के दंभ से जन वृद्धि अब घन घोर है,
भूखें मरे निज जन हमारे अन्न जल उनको मिले,
नि:शुल्क विद्युत-वारि भी फिर क्यों न उनके गुल खिले,
भूखमरी के भूखे हृदय ने जब करी यह भारी भूल।
अरे अब तो बजालो..... ॥४॥

-गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

वर्तमान भारत

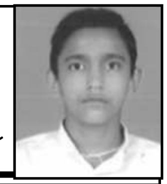

❑ ब्र. राहुल आर्य...✍

है आज भारतवर्ष चहुँदिशि, भ्रष्ट बेड़ों से बंधा,
जो मनुज थे, मतिमान थे, न मचान भी उनका बचा।
सर्वत्र हा-हाकार, अत्याचार की आवाज है,
जो योग्य थे यमलोक के, वो यथेष्ट करते राज हैं।
मत के लिए मरते यूँ मानो, मनुज ये बेकसूर हैं,
बातें बढ़ाव की बाँचना, इनका बना दस्तूर है।
रूह रूढ़िता से रुक्ष है, और रुधिर भी अवरुद्ध है,
निज देश का **गौरव** घटाने को, सदा ये प्रबुद्ध हैं।
यह देश दूषित कर दिया, दुर्बुद्धि दानव देह ने,
मर्दों को मुर्दा कर दिया, मद से भरे अवलेह ने।
दर दर भ्रमित है **देव-व्रत**, दानत्व के इस राज में,
व्रतति वितथ की वितान है, इन दानवों के साज में।
युवकों की यौवनता तबाह की, व्यसन के तुफान ने,
निष्वीर्य युवक कर दिये, कामुक भरे हैवान ने।
जो सर कटाते थे कभी, निज देश की रक्षार्थ में,
वो सर कटाकर मर चुके हैं, प्रेम में निज स्वार्थ में।
सबने गठा गट्ठर गरल का, गबन कर करते गुमान,
जर को ही जन्नत जानते, जड़ता-जड़ित अब नौंजवान।
अश्लीलता अव्वल हुई, अवनति हुई अवछिन्न हैं,
आलोक कि अवली में अली, अब हो गया अवसन्न हैं।
मां भारती कि जय हों, इन शब्दों को मुख से बांचते,
गेहशूर बन दिखलातें सब, बाहर यें चुप्पी साधते।
राका बनी अब दर्श हैं, दर्शित न होता कलानिधि,
मतिमान्ध यूवा बन चुके, मतिभ्रष्टता के महोदधि।
सुरतरू भी **सुमन** विहीन अब, सुरभित सुरा का पान हैं,
सुकृत्य सुकड़ित हो चुके, सुप्रतिष्ठ अब ना सुजान हैं।
अब चन्द पैसों में बिकी हैं, देश की शिक्षा सभी,
है नग्न होकर घूमती अब, योग्यता भी चहुँ- दिशि।
रिश्वत बिना अब देश में, मिलती नहीं आजीविका,
है अयोग्य पर, है कुलीन, वें ही ले रहे पद का मजा।
बालक यहाँ नन्हें सड़क पर, भीख लेते दीखते,
मारे अशिक्षा के गरीबी, से सदा वें जूझते।
सूर्य-प्रताप किया पतित, इन प्रलय रूपी पन्थों ने,
जकड़ी हुई है सभ्यता, धर्मान्ध के हथकण्डों ने।
पाखण्ड पाँव पसारकर, बैठा हुआ हर घर में है,
इस **अजब**-सी अज्ञानता से, हर कोई संकट में है।
जो धर्म और सुकर्म था, **अंकित** ही केवल रह गया,
मनुजत्व अब पाषाण बन, अद्रि-शिखा से ढह गया।
अब और ना लिख सकता मैं, इस देश की दु:ख दासता,
विह्वल हुआ विचलित हुआ मन, और साहस ना बचा।
उठ जाओ युवा और लड़ो, इस मद भरे मातङ्ग से,
खुद मुक्त हो मुक्ति दिला दो, देश को आतंक से।
हे युवकगण! तुम से ही मेरी, प्रार्थना अन्तिम अहो!,
चिन्ता नहीं क्यों देश की, रहते ना तुम इसमें कहो।
हे नवयुवाओं! व्यथित भारत, को तुम्हीं से आस है,
तुमसे प्रबुद्ध भविष्य है, बसती तुम्हीं में साँस है।
प्रचलित प्रभाकर **प्राची** से, पश्चिम को होता प्राप्त है,
प्रज्ञा प्रतीप न जाती है, जिसका प्रचण्ड प्रताप है।
'राहुल' न कहता और अब, पर रह गया बहु बाकी है,
बेजान तन की चेतता को, यह व्यथा ही काफी है।

- शास्त्री द्वितीय वर्ष
गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

समीक्षा - प्रस्तुत कविता अत्यन्त मार्मिक शब्दों का संयोजन है। इस कविता में ब्र. राहुल आर्य का अथक परिश्रम दृष्टिगोचर हो रहा है, क्योंकि प्रस्तुत कविता में छात्र ने अपनी श्रेणी के सभी साथियों तथा समस्त परिवारिक सदस्यों के नामों का सार्थक एवं छन्दबद्ध (हरिगीतिका) संयोजन किया है। 'आर्ष-ज्योति:' परिवार ब्र. राहुल आर्य के कुशल व प्रखर लेखन कौशल की कामना करता है। - कार्यकारी सम्पादक

क्रीड़ाजगत: जाज्वल्यमाननक्षत्राणि

बालिका क्रीड़का मल्लयुद्धेरवा:,
भारतीये दलै वै विदेशे गता:।
हेमसंभ्यादितं स्थानकं लेभिरे,
भारतस्यास्य नामोन्नतं चक्रिरे ॥१॥

-ब्र. रन्जुरेखार्या

सौरभश्चापि देशस्य पुत्राो महान्,
हेमसम्मानमाण्तवान् यो राजते।
कीर्तिमानं धरायां मुदाऽस्थापयत्,
जीवतात् ते भवेत् सौरभं भारते॥२॥

-ब्र. इलावती आर्या

उत्तराण्डराज्येऽधुना राजते,
आर्षविद्यालये ग्रामपौन्धास्थित:।
तत्र चाधीतविद्यो यशस्वी महान्,
दीपको राजतं स्थानकं प्राप्तवान्॥३॥

-ब्र. नीतु आर्या

वायुसेना गतो राष्ट्रसेवारत:,
मातृभूमे: सुतो लक्ष्यवेद्येरत:।
दीप्तिमान् दीपको भारते भासते,
हे गुरुणां प्रिय! तावकं स्वागतम्॥४॥

-ब्र. जेली आर्या

भारतीयाविने शाख्यया कन्यया,
चीनजापानयो: कन्यके मर्दिते।
हेमसम्मानदे स्थानके प्रार्जिते,
मल्लयुद्धै तथा कीर्ति: संस्थापिताम्॥५॥

-ब्र. प्रमोदिनी आर्या

धन्यया कन्यया गौरवं प्रार्जितम्,
मातृभूमेश्च नामोन्नतं वैकृतम्।
श्रीहरे: मेदिनी शोभितकर्मणा
कार्तिके यस्य भू: गौरवेणान्विता॥६॥

-ब्र. पुष्पाञ्जली आया

नोट - प्रस्तुत श्लोक आर्ष कन्या गुरुकुल घुचापाली, जि.-बरगढ़ की ब्रह्मचारिणियों ने आचार्य यज्ञवीर जी तथा आचार्या शारदा जी के निर्देशन में निर्मित किये हैं।

वाजपेयी ततो वै ह्यनन्ते रत:

वाजपेयीगतो देवलोकं प्रति,
तादृशो राजते ता न वै संप्रति।
देशभक्तो महानक्रान्तिकारी तथा,
कोविदो राजनीते प्रवक्ता तथा॥१॥ **-ब्र. हीराकान्ति**

राष्ट्रसंघे च यो भारतीयां स्कां,
राष्ट्रभाषां मुदा भाषमाणो बुध:।
राजते भारते रत्नगर्भासुत:,
धर्मभाभूषितो न्यायविद्यायुत:॥२॥ **-ब्र. ब्यूटी**

शान्तिसंस्थापितं पाकयात्राकृता,
शस्त्रचिन्तातथाणो: पुनदर्शिता।
भासते भारते रत्नसम्मानित:,
कार्गिले संगरे वैविजेताऽभवत्॥३॥ **-ब्र. स्वप्ना**

शोकमग्ना: जना: दर्शनार्थं गता:,
दर्शनं साश्रुभिश्चक्षुभि: कुर्वताम्।
व्याकुलानां जनानां सुदीर्घा तति:,
नैव लेभे समाप्तिं सूर्ये गते॥४॥ **-ब्र. संगीता**

श्रद्धया ते जना अन्धकारे सति,
तेजसश्चक्रयुक्तं ददर्शु: कविम्।
तस्य साभा विचित्रा हि दृष्टा जनै:,
शोचयन्तस्तथा ते तु गेहे गता:॥५॥ **ब्र. बुद्धिमता**

श्रीनरेन्द्रश्च मोदी पदातिर्गत:,
वाग्मितां विस्मृत: सन्सवै मूकवत्।
रुद्धकण्ठस्तथा साश्रुभ्यां चक्षुभ्याम्,
तस्य पादानुकूलं पथा ह्यन्वगात्॥६॥ **-ब्र. रूबी**

श्रीयुत: कोविदश्चापिशोकाकुल:,
राष्ट्रसेवाग्रणी तं हि सम्मानितुम्।
अध्यतिष्ठक्षदा सेनया संयुत:,
स्वर्गतं वाजपेयीं ससम्मानयत्॥७॥ **-ब्र. पिंकी**

पार्थिवं तं शरीरं ह्यदात् पुत्रिका,
दन्तिका वह्नये श्रद्धया आनता।
पञ्चतत्वेतदा तद् विलीनं कृतम्,
आत्मतत्वं ततो वै ह्यनन्तेरवम्॥८॥**-ब्र. कामिनी**

योगदर्शनशिक्षणम्

❑ शिवदेव आर्यः...✍

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः (योगदर्शन.-१/२)

समास-

योगः+चित्तवृत्तिनिरोधः=योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः। चित्तवृत्तिनां निरोधः=श्चित्तवृत्तिनिरोधः।

पदार्थव्याख्या-

योगः=योग कहलाता है **चित्तवृत्तिनिरोधः**=चित्त की वृत्तियों को रोकना।

सूत्रार्थ-

चित्त की वृत्तियों के रोकने का नाम योग है।

व्यासभाष्य-

सर्वशब्दाग्रहणात्संप्रज्ञातोऽपि योग इत्याख्यायते। चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलत्वात् त्रिगुणम्।

प्रख्यारूपं हि चित्तसत्त्वं रजस्तमोभ्यां संसृष्टमैश्वर्यविषयप्रियं भवति। तदेव तमसोनुविद्धमधर्माज्ञानावैराग्यानैश्वर्योपगं भवति। तदेव प्रक्षीणमोहावरणं सर्वतः प्रद्योतमानमनुविद्धरजोमात्रया धर्मज्ञानवैराग्यैश्वर्योपगं भवति। तदेव रजोलेशमलापेतं स्वरूपप्रतिष्ठं सत्त्वपुरुषान्यताख्यातिमात्रं धर्ममेघध्यानोपगं भवति। तत्परं प्रसंख्यानमित्याचक्षते ध्यायिनः।

चितिशक्तिरपरिणामिन्यप्रतिसंक्रमादर्शितविषया शुद्धा चानन्ता च सत्त्वगुणात्मिका चेयमतो विपरीता विवेकख्यातिरिति। अतस्तस्यां विरक्तं चित्तं तामपि ख्यातिं निरुणद्धि। तदवस्थं संस्कारोपगं भवति। स निर्बीजः समाधिः। न तत्र किंचित्संप्रज्ञायत इत्यसंप्रज्ञातः। द्विविधः स योगश्चित्तवृत्तिनिरोध इति।

व्यासभाष्य पदार्थ व्याख्या-

सर्वशब्दः='सर्व' शब्द का[1] **अग्रहणात्**=ग्रहण न करने से **संप्रज्ञातः**='संप्रज्ञात समाधि' **अपि**=भी **योगः**=योग है **इति**=ऐसा **आख्यायते**=कहा जाता है। **चित्तं हि**=चित्त को ही **प्रख्या**=प्रकाशशील, **प्रवृत्तिः**=क्रियाशील, **स्थितिः**=स्थितिशील, **शीलत्वात्**=स्वाभाव वाला होने से **त्रिगुणम्**=तीन गुणों वाला कहा गया है।

प्रख्यारूपम्=प्रकाशशील रूप वाला **हि**=निश्चय से **चित्तसत्वम्**=सत्त्वगुण प्रधान वाला चित्त होता है। **रजस्तमोभ्याम्**=रजोगुण और तमोगुण से **संसृष्टम्**=मिलकर **ऐश्वर्यविषयप्रियम्**=ऐश्वर्यविषय प्रिय **भवति**=होता है। **तदेव**=वही सत्त्व गुण प्रधान वाला चित्त, **तमसा**=तमोगुण से **अनुविद्धम्**=युक्त हुआ **अधर्मम्**=अधर्म को, **अज्ञानम्**=अज्ञान को, **अवैराग्यम्**=अवैराग्य को, **अनैश्वर्यम्**=अनैश्वर्य को **उपगम्**=प्राप्त **भवति**=होता है। **तदेव**=वही उपरोक्त चित्त **प्रक्षीणमोहावरणम्**=मोह (तमोगुण) के आवरण से रहित होने से **सर्वतः**=सब ओर से **प्रद्योतमान्**=प्रकाशशील **अनुविद्धम्**=युक्त होता है **रजामात्रया**=रजोगुण से **धर्मम्**=धर्म को, **ज्ञानम्**=ज्ञान को, **वैराग्यम्**=वैराग्य को, **ऐश्वयम्**=ऐश्वर्य को **उपगम्**=प्राप्त **भवति**=होता है। **तदेव**=वही उपरोक्त चित्त **रजोलेशमलापेतम्**=रजोगुण के मल मात्र से पृथक् होकर **स्वरूपप्रतिष्ठम्**=अपने स्वरूप में प्रतिष्ठित होता है **सत्त्वपुरुषान्यताख्यातिमात्रम्**=सत्त्व चित्त और पुरुष का भिन्न-भिन्न ज्ञान परिपक्व होने पर **धर्ममेघध्यानम्**=धर्ममेघध्यान **उपगम्**=प्राप्त **भवति**=होता है। **तत्**=उस धर्ममेधध्यान समाधि वाले चित्त को **प्रसंख्यानम्**=परम् प्रसंख्यान **इति**=ऐसा **आचक्षते**=कहते हैं **ध्यायिनः**=योगी लोग। **चितिशक्तिः**=चेतन शक्ति (आत्मा) **अपरिणामिनी**=परिणाम को न प्राप्त होने वाली[2] **अप्रतिसंक्रमा**=निर्लेप अर्थात् किसी पदार्थ में घुलने मिलने के स्वभाव से रहित **दर्शितविषया**=देख लिया है विषयों को जिस चित्त ने **शुद्धा**=शुद्ध **च**=और **अनन्ता**=अन्त अर्थात् नाश रहित है। **च**=और **सत्त्वगुणात्मिका**=चित्त के सत्त्वस्वरूप में प्राप्त बुद्धि वृत्ति रूप **च**=और **इयम्**=यह **अतः**=इस चेतन शक्ति से **विपरीता**=विपरीत अर्थात् भिन्न स्वभाव वाली **विवेकख्यातिः**=विवेकख्याति **इति**=ऐसा है। **अतः**=इसलिए

- गुरुकुल पौन्धा, देहरादून (उ.ख.)

तस्याम्=विवेकख्याति के प्रति **विरक्तम्**=विरक्त अर्थात् रागरहित हुआ **चित्तम्**=चित्त **ताम्**=उसको **अपि**=भी **ख्यातिम्**=विवेकख्याति को **निरुणद्धि**=रोक देता है। **तद्** =इस **अवस्थम्**=अवस्था वाला चित्त **संस्कारोपगम्**= संस्कारमात्र शेष स्थिति प्राप्त वाला **भवति**=होता है। **सः**=वह **निर्बीजः**=निर्बीज **समाधिः**=समाधि है। **न**=नहीं होता है **तत्र**=इस अवस्था में **किञ्चित्**=कुछ **सम्प्रज्ञायत**= सम्प्रज्ञात स्थिति में जाने हुए पदार्थ का ज्ञान **इति**=ऐसी **असम्प्रज्ञातः**=निर्बीज समाधि को असम्प्रज्ञात समाधि कहते हैं। **द्विविधः**= दो प्रकार का (सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात) **सः**=वह **योगः**=योग **चित्तवृत्तिनिरोधः**=चित्तवृत्तियों का निरोध रूप **इति**=ऐसा।

व्यासभाष्य व्याख्या-

प्रस्तुत सूत्र में 'सर्व' शब्द के ग्रहण न करने से 'सम्प्रज्ञात समाधि' भी योग कहलाती है। चित्त तीन प्रकार के स्वभाव वाला प्रकाशशील अर्थात् सत्त्वगुण वाला, गतिशील अर्थात् रजोगुण वाला और स्थितिशील अर्थात् तमोगुण वाला है। इससे यह त्रिगुणात्मक है।

प्रकाशशील चित्त, सत्त्व, रजस् एवं तमस् से संसृष्ट होकर ऐश्वर्य एवं विषय का इच्छुक होता है। वही चित्तसत्त्व तमस् के द्वारा बिंधा हुआ अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य एवं अनैश्वर्य को प्राप्त होता है। वही चित्तसत्त्व क्षीणमोहावरणवाला सब ओर से प्रकाशमान् रजोमात्रा से संसृष्ट धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य को प्राप्त होता है। वही चित्तसत्त्व रजोगुण की मात्रा रूपी मल के सम्पर्क से पृथक् हुआ, अपने शुद्ध रूप में प्रतिष्ठित और बुद्धि तथा पुरुष की पृथक्ता के ज्ञान से युक्त, धर्ममेघ समाधि को प्राप्त होता है। योगी लोग उस धर्ममेघ समाधिनिष्ठ चित्त को **'परं प्रसंख्यान'** कहते हैं।

चेतन पुरुष परिणाम से रहित, निर्लेप बुद्धि आदि के सम्मिश्रण से रहित विषयों का द्रष्टा, शुद्ध, नाशरहित है। सत्त्वगुणात्मिका यह विवेकख्याति इस चितिशक्ति=जीवात्मा से विरुद्ध स्वभाव वाली है। उस विवेकख्याति के प्रति विरक्त चित्त उसको भी रोक देता है। उस अवस्था को प्राप्त चित्त संस्कारमात्रशेष स्थिति वाला होता है। वह निर्बीज समाधि है। उस अवस्था में सम्प्रज्ञात स्थिति में ज्ञात पदार्थों का परिज्ञान नहीं होता। वह चित्तवृत्तिनिरोध योग दो प्रकार का है।

महर्षि दयानन्दोक्त -

१. उपासनासमये व्यवहारसमये वा परमेश्वरादतिरिक्तविषयादधर्मव्यवहाराच्च मनसो वृत्तिः सदैव निरुद्धा रक्षणीयेति।

चित्त की वृत्तियों को सब बुराईयों से हटाके शुभ गुणों में स्थिर करके परमेश्वर के समीप में मोक्ष को प्राप्त करने को योग कहते हैं और वियोग उसको कहते हैं कि परमेश्वर और उसकी आज्ञा से विरुद्ध बुराईयों में फँसके उससे दूर हो जाना। **-ऋग्वेद.भू., उपासनाविषय**

२. 'मनुष्य रजोगुण तमोगुणयुक्त कर्मों से मन को रोक शुद्ध सत्त्वगुणयुक्त कर्मों से भी मन को रोक, शुद्ध सत्त्वगुणयुक्त हो, पश्चात् उसका निरोध कर एकाग्र अर्थात् एक परमात्मा और धर्मयुक्त कर्म इनके अग्रभाग में चित्त का ठहरा रखना निरुद्ध अर्थात् सब ओर से मन की वृत्ति को रोकना।

-सत्यार्थप्रकाश, नवम् समुल्लास

टिप्पणी :-

1. सर्व शब्द के ग्रहण न करने से तात्पर्य है कि प्रस्तुत सूत्र **योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः** में **सर्ववृत्तिनिरोधः** ऐसा न कहे जाने से सम्प्रज्ञात समाधि भी योग कहलाती है।

2. धर्म, लक्षण और अवस्था को परिणाम कहते हैं। -योगदर्शन 3/13।

शेष अग्रिम अंक में......

- गुरुकुल पौन्धा,
देहरादून

जहाँ शस्त्र बल नहीं वहाँ शास्त्र पछताते या रोते हैं,
ऋषियों को भी सिद्धि तप से तभी मिलती है,
जब पहरे पर स्वयं धनुर्धर राम खड़े होते हैं।

डॉ. रघुवीर वेदालङ्कार

प्रो. महावीर अग्रवाल

भारत सरकार ने डॉ. रघुवीर वेदालङ्कार जी एवं प्रो. महावीर अग्रवाल जी को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा की।

वेदार्ष महाविद्यालय न्यास की ओर से हार्दिक अभिनन्दन

दिल्ली संस्कृत अकादमी (दिल्लीसर्वकारः)

प्लाट सं.-५, झण्डेवालानम्, करोलबागोपनगरम्, नवदेहली-११०००५

दूरभाष : - २३६३५५९२, २३६८१८३५, २३५५५६७६

दिल्ली सरकार
आप की सरकार

Department of Art Culture & Languages
Government of Delhi

आवश्यक-सूचना

आखिल भारतीय मौलिक संस्कृत लघु नाटक एवं लघु कथा लेखन-प्रतियोगिता

(वर्ष २०१८-१९)

दिल्ली संस्कृत अकादमी अखिल भारतीय स्तर पर संस्कृत विद्वानों एवं विदुषियों से संस्कृत भाषा में मौलिक रूप में लिखित लघु नाटक एवं लघु कथा पुरस्कारार्थ आमन्त्रित किये जाते हैं। जिसमें रू.३०००/-, रू.२५००/-, रू.२०००/-, रू.१५००/-, रू.१२००, रू.१०००/-, रू.६००/, रू.५००/- के क्रमशः आठ पुरस्कार होंगे। इनके अतिरिक्त रू.४००/- के छः प्रोत्साहन पुरस्कार दिये जायेंगे।

प्रतिभागी लेखक निम्नलिखित दिशा-निर्देशों को दृष्टि में रखकर ही अपनी रचना भेजें :-

१. लघु नाटक एवं लघु कथा स्वयं की मौलिक रचना होनी चाहिए, जिससे सम्बन्धित स्वहस्ताक्षरित घोषणा पत्र संलग्न करना आवश्यक है।

२. संस्कृत लघु नाटक एवं लघु कथा कम से कम चार पृष्ठों में ए ४ साइज एवं अधिक ५ पृष्ठों में टंकित रूप में होनी चाहिए।

३. संस्कृत लघु नाटक एवं लघु कथा का कोई भी अंश अश्लील, अनर्यादित, राष्ट्र विरोधी तथा व्यक्तिगत आक्षेप युक्त नहीं होना चाहिए।

४. संस्कृत लघु नाटक एवं लघु कथा बालोपयोगी तथा शिक्षाप्रद होनी चाहिए।

५. संस्कृत लघु नाटक एवं लघु कथा ई.मेल अथवा डाक द्वारा प्रविष्टियाँ अकादमी कार्यालय में जमा कराने की अन्तिम तिथि 31-10-2018 तक अकादमी कार्यालय में प्राप्त होनी चाहिए।

नोट - लेखकों द्वारा लघुनाटक एवं लघु कथा लेखन प्रतियोगिता हेतु प्रविष्टियाँ अलग-अलग प्रेषित की जानी चाहिए।

अधिक जानकारी के लिए अकादमी की वेबसाईट **www.sanskritacademy.delhi.gov.in** पर देखें।

ह0/-
(डॉ. जीतराम भट्ट)
सचिव

Facebook : www.facebook.com/delhisanskritacademy
Email : delhisanskritacademy@gmail.com